

यमुनापार क्षेत्र में 'एम्स' अस्पताल की स्थापना की मांग

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) में प्रयागराज के मरीजों को आदित्यनाथ जी का ध्यान इस नैनी/प्रयागराज। 80 लाख की लखनऊ, रायबरेली, गोरखपुर तरफ आकर्षित करता है



आबादी वाले प्रयागराज में स्वास्थ्य सेवाओं की वर्तमान स्थिति को और सुधारने के लिए यमुनापार क्षेत्र में एम्स की स्थापना अनिवार्य है। यह बातें गुरुवार को नैनी स्थित एक गेस्ट हाउस में आयोजित पत्रकार वार्ता के दौरान उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल के प्रदेश मंत्री एवं भाजपा के वरिष्ठ नेता सत्यम शुकल ने कही। उन्होंने बताया, कि लगभग 5500 वर्ग किलोमीटर में फैले प्रयागराज जिले की 80 लाख आबादी के लिए वर्तमान में केवल स्वरूप रानी, बेली, कमला नेहरू, कालिन्ध और डफरिन जैसे अस्पताल ही उपलब्ध हैं। इन अस्पतालों पर बढ़ते बोझ के कारण आम नागरिक को संतोषजनक इलाज नहीं मिल पाता। बेहतर इलाज की तलाश

या बीएचयू (वाराणसी) जाना पड़ता है, जिनकी औसत दूरी लगभग 300 किलोमीटर है। गंभीर स्थिति में यह लंबी यात्रा अक्सर मरीजों के लिए जानलेवा साबित होती है। उन्होंने बताया, कि 'यमुनापार का क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से पूरे जिले का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। यहाँ एम्स की स्थापना होने से न केवल शहर, बल्कि सुदूर ग्रामीण इलाकों और पड़ोसी जनपदों के लोगों को भी आधुनिक चिकित्सा सुविधा न्यूनतम दूरी पर प्राप्त होगी। उन्होंने बताया, कि राष्ट्रीय स्तर के इस संस्थान के आने से क्षेत्र में बुनियादी ढांचे का विकास होगा और स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के व्यापक अवसर पैदा होंगे। उन्होंने प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी

प्रयागराज की जनता के स्वास्थ्य और भविष्य को ध्यान में रखते हुए इस प्रस्ताव को गंभीरता से लेने की मांग की है। उन्होंने कहा, कि यमुनापार में एम्स की स्थापना से 'पीड़ित-वंचित' वर्ग को अपने ही जिले में विश्वस्तरीय और किफायती इलाज मिल सकेगा। प्रयागराज में एम्स की स्थापना होने से जनता को इलाज के लिए दूसरे शहरों की ओर भागने पर मजबूर न होना पड़े, यही हमारा संकल्प है। यदि यहाँ एम्स आता है, तो यह केवल एक अस्पताल नहीं, बल्कि लाखों लोगों के लिए जीवनदायक साबित होगा। इस मौके पर लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉक्टर के. बी पांडेय, श्रमिक नेता आर.एल.डी दुबे समेत भाजपा के कई लोग मौजूद रहे।

251 नवचयनित आंगनबाड़ी सहायिकाओं को वितरित किये गये नियुक्ति पत्र, 620 आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों को वितरित किये गये स्मार्ट फोन

आंगनबाड़ी केन्द्र केवल बच्चों के पोषण और शिक्षा का माध्यम नहीं हैं, बल्कि यह समाज के भविष्य को मजबूत बनाने की है आधारशिला - मा0 मंत्री

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। विधानसभा

आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों बच्चों व महिलाओं को स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने में सेतु का कर रही कार्य - डॉ0 मनोज कुमार पाण्डेय

ऊँचाहार के अंतर्गत नव चयनित आंगनबाड़ी सहायिकाओं को

स्मार्ट फोन वितरण का कार्यक्रम नहीं है, बल्कि यह महिला सशक्तिकरण, बाल विकास एवं डिजिटल सुशासन की दिशा में प्रदेश सरकार की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। उन्होंने नव नियुक्त आंगनबाड़ी सहायिकाओं को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आप सभी समाज की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाने जा रही हैं। आंगनबाड़ी केन्द्र केवल बच्चों के पोषण और शिक्षा का

आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों एवं सहायिकाओं को आधुनिक संसाधनों से जोड़ने का उद्देश्य यह है कि वे अपने कार्यों को और अधिक प्रभावी, पारदर्शी एवं सुगम तरीके से संचालित कर सकें। उन्होंने कहा कि स्मार्ट फोन वितरण से विभागीय योजनाओं की ऑनलाइन मॉनिटरिंग, लाभार्थियों का डेटा संकलन, पोषण ट्रैकिंग तथा शासन स्तर पर सूचनाओं के आदान-प्रदान में तेजी आएगी। डिजिटल तकनीक के माध्यम से सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार होगा तथा जरूरतमंदों तक योजनाओं का लाभ समयबद्ध तरीके से पहुंच सकेगा। मंत्री ने नव नियुक्त सहायिकाओं से अपेक्षा की कि वे पूरी निष्ठा, संवेदनशीलता एवं समर्पण भाव से अपने दायित्वों का निर्वहन करें और शासन की योजनाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने में सक्रिय भूमिका निभाएं। अंत में मंत्री ने सभी आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों एवं सहायिकाओं को उज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए विश्वास व्यक्त किया कि आप सभी अपने कार्यों के माध्यम से समाज एवं प्रदेश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देंगी। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य विकास अधिकारी ने कहा कि आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों एवं



नियुक्ति पत्र एवं आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों को स्मार्ट फोन वितरण कार्यक्रम का आयोजन बाल विकास पुष्ताहार विभाग द्वारा सिविल लाइन स्थित सूर्या होटल में किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में मा0 मंत्री खाद्य एवं रसद तथा नागरिक आपूर्ति विभाग 3090 सरकार डॉ0 मनोज कुमार पाण्डेय द्वारा प्रतिभाग किया गया। कार्यक्रम में ब्लॉक प्रमुख जगतपुर दल बहादुर सिंह, मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता उपस्थित रही। मंत्री द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विधानसभा ऊँचाहार क्षेत्र के अंतर्गत विकास खण्ड डलमऊ, दीनशाहगौरा, ऊँचाहार, जगतपुर एवं रोहिनिया की 03-03 नवनियुक्त आंगनबाड़ी सहायिकाओं को नियुक्ति पत्र एवं आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों को स्मार्ट फोन वितरित किए गए। जिसमें विधानसभा ऊँचाहार के अंतर्गत विकास खण्ड डलमऊ की 103, दीनशाहगौरा 25, ऊँचाहार 73, जगतपुर 18 एवं रोहिनिया 32 वृत्तों का कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि बच्चों एवं माताओं का बेहतर स्वास्थ्य ही एक मजबूत और विकसित समाज की नींव है। मंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार महिलाओं को आत्मनिर्भर एवं सशक्त बनाने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में प्रदेश में महिलाओं एवं बच्चों के कल्याण हेतु अनेक जनहितकारी योजनाएं संचालित की जा रही हैं।

माध्यम नहीं हैं, बल्कि यह समाज के भविष्य को मजबूत बनाने की आधारशिला है। मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, पोषण, टीकाकरण तथा बच्चों के प्रारंभिक विकास में आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों एवं सहायिकाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि



आंगनबाड़ी कार्यकर्त्री राष्ट्र के लिए नव सृजन व नव निर्माण का कार्य कर रही हैं, बच्चों व महिलाओं को स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने में सेतु का कार्य कर रही हैं। उन्होंने कहा कि बच्चों एवं माताओं का बेहतर स्वास्थ्य ही एक मजबूत और विकसित समाज की नींव है। मंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार महिलाओं को आत्मनिर्भर एवं सशक्त बनाने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में प्रदेश में महिलाओं एवं बच्चों के कल्याण हेतु अनेक जनहितकारी योजनाएं संचालित की जा रही हैं।

सहायिकाएं महिला एवं बाल विकास योजनाओं के सफल संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। स्मार्ट फोन उपलब्ध कराए जाने से कार्यों में पारदर्शिता आएगी तथा योजनाओं की मॉनिटरिंग एवं लाभार्थियों तक सेवाओं की पहुंच और अधिक प्रभावी होगी। कार्यक्रम का संचालन एस0एस0 पाण्डेय द्वारा किया गया। कार्यक्रम में जिला कार्यक्रम अधिकारी सुरेंद्र कुमार सहित सम्बन्धित बाल विकास परियोजना अधिकारी, आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों एवं सहायिकाएं उपस्थित रही।

संस्कार व लोकगीतों पर 10 दिवसीय पाठशाला का शानदार समापन

'संस्कार और लोकगीत पारंपरिक विलुप्त हो रहे हैं, इन्हें बचाने की आवश्यकता' - ज्योति गुप्ता, लोकगीत व पारंपरिक गीतों से मन की होती है शुद्धिकरण



(आधुनिक समाचार नेटवर्क) हरदुआ/वाराणसी। मोतीलाल मानव उत्थान समिति वें तत्वावधान में आयोजित संस्कार एवं लोकगीतों पर आधारित 10 दिवसीय कार्यशाला का भव्य एवं शानदार समापन समारोह संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन एवं गणेश वंदना के साथ किया गया। 10 दिनों तक चली इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य हमारी समृद्ध लोक-सांस्कृतिक परंपराओं, पारंपरिक गीतों एवं संस्कारों को संरक्षित कर नई पीढ़ी तक पहुंचाना रहा। वक्ताओं ने कहा कि आज डिजिटल युग में अश्लील गीतों और भ्रामक मनोरंजन के कारण पारंपरिक लोकगीत एवं संस्कार धीरे-धीरे विलुप्त होते जा रहे हैं, जिन्हें पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। इस अवसर पर लोक गायिका ज्योति गुप्ता ने कहा कि पहले लोग लोकगीतों, सांस्कृतिक परंपराओं और संस्कारों को सहेजकर रखते थे, लेकिन आज अश्लील गीतों की भीड़ में हमारी



करते हैं। लोकगीतों में हमारी संस्कृति, भावनाएं और परंपराओं की आत्मा बसती है, जिसे बचाना समय की मांग है। कार्यक्रम में समाजसेवी एवं चीफ वार्डन सिविल डिफेंस वाराणसी केशव भाई जलान, प्रसिद्ध शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय गायिका सुचारिता गुप्ता, ऑल इंडिया रेडियो के टॉप ग्रेड कलाकार एवं डोलक सम्राट सुभाष कर्नोजिया, म्यूजिक डायरेक्टर अजय त्रिपाठी सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम का आयोजन मोतीलाल मानव उत्थान समिति वें संस्थापक एवं

सरोज ने किया। समापन समारोह में प्रतिभागियों द्वारा गंगा बधाई, बाजा गीत, यात्रा गीत, तुलसी मगन भइले, सोहर गीत तथा 'गोकुल में बाजे बंधिया' जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मनमोहक प्रस्तुतियां दी गईं। कार्यक्रम में प्रतिभागी कलाकारों में ज्योति गुप्ता, उजाला पांडे, सुमन विश्वकर्मा, रानी गुप्ता, अंशिका, मनीष यादव, श्रेया सिंह, गायत्री खरवार, महिमा पटेल, अनूज पटेल, रेनु प्रजापति एवं नीरू प्रजापति सहित अन्य लोग उपस्थित रहे। समारोह के अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र एवं अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया गया।

निरीक्षक नीलम पाण्डेय ने आधिकारिक तौर पर अपना पदभार ग्रहण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ। उत्तर प्रदेश की प्रभारी पूरी तरह एक्शन मोड में नजर आ रही हैं और उन्होंने पीड़ित की बात को गंभीरता से सुनना शुरू कर दिया है। इसके



लखनऊ के वीआईपी (VIP) महिला थाने की कमान

अब प्रभारी निरीक्षक नीलम पाण्डेय के हाथ

राजधानी लखनऊ के सबसे प्रमुख और संवेदनशील इलाके में हजरतगंज स्थित महिला थाने में नई तैनाती के बाद प्रभारी निरीक्षक नीलम पाण्डेय ने आधिकारिक तौर पर अपना पदभार ग्रहण कर लिया है। कार्यभार संभालते ही नई थाना महिला सुरक्षा तथा कानून व्यवस्था को लेकर अपनी सक्रियता बढ़ा दी है। पीड़िताओं और फरियारियों की समस्याओं वें त्वरित व न्यायसंगत निस्तारण को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता बताते हुए उन्होंने थाना परिसर में आने वाले प्रत्येक

साथ ही उन्होंने थाने वें अधीनस्थ पुलिसकर्मियों को पीड़ितों के प्रति संवेदनशीलता बरतने और लंबित मामलों की जांच में तेजी लाने के आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए हैं, जिसकी स्थानीय स्तर पर काफ़ी सराहना की जा रही है।

युवाओं के सपनों और पढ़ाई के दबाव पर आधारित फिल्म 'ड्रॉप आउट' हुई रिलीज

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। आज के दौर के युवाओं



की आकांक्षाओं और उन पर पड़ने वाले सामाजिक व शैक्षणिक दबाव को बड़ी ही संवेदनशीलता से दर्शाती फिल्म 'ड्रॉप आउट' जल्द ही बड़े पर्दे पर दस्तक दे दी है। यह फिल्म उन अनगिनत करने की जहोजहद में अक्सर करियर और समाज की अपेक्षाओं के बीच उलझ जाते हैं। निर्माता उमाशंकर यादव और निर्देशक आंकर पेंठकर की यह जोड़ी 'ड्रॉप आउट' के माध्यम से



नेपाल में रायबरेली की नर्तकी प्रतिभा हिमानी दीक्षित ने इंटरनेशनल डांस प्रतियोगिता में जलवे बिखेरे, गोल्ड मेडल जीत, बढ़ाया भारत का मान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। नेपाल की राजधानी काठमांडू में आयोजित

सात वर्षीय हिमानी दीक्षित ने नेपाल में आयोजित इंटरनेशनल डांस स्पोर्ट्स चैंपियनशिप में कई देशों के प्रतिभागियों को पछाड़ा, तिरंगा लहराकर बढ़ाया भारत का मान

इंटरनेशनल डांस स्पोर्ट्स



विभिन्न वर्गों में भारत ने सर्वाधिक स्वर्ण पदक अर्जित कर अपनी सांस्कृतिक प्रतिभा, अनुशासन और खेल क्षमता का दमदार परिचय दिया। स्वर्ण पदक जीतने के साथ ही अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारतीय तिरंगा शान से लहराया, जिसने पूरे देश को गौरवान्वित होने का अवसर दिया। हिमानी के पिता तुषार दीक्षित ने बताया कि प्रतियोगिता में भारत के प्रतिभागियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए विश्व पटल पर देश की प्रतिभा का

चैंपियनशिप-2026 में रायबरेली की जन्मी अमर नगर निवासी सात वर्षीय बाल प्रतिभा हिमानी प्रभावी परिचय दिया। वर्तमान में हिमानी वें माता-पिता गाजियाबाद में निवास करते हैं।



दीक्षित ने स्वर्ण पदक जीतकर अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत का गौरव बढ़ाया है। साउथ एशियन फेडरल फॉर ऑल स्पोर्ट्स (एसएफएएस) के तत्वावधान में आयोजित इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में हिमानी ने अपने अद्भुत प्रदर्शन से न केवल रायबरेली बल्कि पूरे देश का नाम रोशन किया। रायबरेली की होनहार बेटी हिमानी दीक्षित, पुत्री तुषार दीक्षित, ने प्रतियोगिता में श्रीलंका, भूटान, नेपाल, पाकिस्तान समेत विभिन्न देशों से आए प्रतिभागियों को कड़ी टक्कर देते हुए स्वर्ण पदक अपने नाम किया। महज सात वर्ष की आयु में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हासिल की गई यह उपलब्धि जिले वें लिए ऐतिहासिक उपलब्धि बन गई है। हिमानी की शानदार प्रस्तुति ने निर्णायकों और दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रतियोगिता के दौरान भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन अत्यंत प्रभावशाली रहा और

गैंगस्टर एक्ट के तहत अर्जित रु.15.29 लाख मूल्य बड़ी कार्यवाही, अपराध से की 02 पिकअप वाहन कुर्क

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक सोनभद्र श्री अभिषेक वर्मा द्वारा गैंगस्टर एक्ट के तहत वांछित अभियुक्तों की गिरफ्तारी एवं अपराध से अर्जित अवैध सम्पत्तियों के विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में, अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन) श्री ऋषभ रूणवाल वें निर्देशन एवं क्षेत्राधिकारी दुद्धी श्री राजेश कुमार राय के निकट पर्यवेक्षण में थाना दुद्धी पुलिस द्वारा बड़ी कार्यवाही करते हुए गैंगस्टर एक्ट में वांछित अभियुक्तों की अपराध से अर्जित चल सम्पत्ति को कुर्क किया गया। थाना दुद्धी पर पंजीकृत मु030सं0 01/2026 धारा 3(1) 30प्र0 गिराहबंद एवं समाज विरोधी क्रियाकलाप निवारण अधिनियम 1986 से सम्बन्धित अभियुक्तों द्वारा अपराध जगत से अर्जित धन से क्रय की गयी चल सम्पत्ति को श्रीमान जिलाधिकारी सोनभद्र, जनपद सोनभद्र के आदेश के अनुपालन में अन्तर्गत धारा 14(1) 30प्र0 गैंगस्टर एक्ट के तहत नियमानुसार कुर्क किया गया। कुर्क की गयी सम्पत्ति में गैंग सदस्य अखिलेश कुमार यादव पुत्र वैजनाथ यादव निवासी कुदाल थाना कोथ जनपद सोनभद्र के नाम पंजीकृत वाहन संख्या यूपी64सीटी4309 पिकअप वाहन कीमत लगभग रु.10,29,200/- तथा गैंग सदस्य आशीष यादव पुत्र राजेश यादव निवासी मुडीसेमर (जामपाणी) थाना विण्डमगंज जनपद सोनभद्र के नाम पंजीकृत वाहन संख्या यूपी64सीटी2715 पिकअप वाहन कीमत लगभग रु.5,00,000/- शामिल हैं। कुर्क की गयी सम्पत्ति की कुल अनुमानित कीमत रु.15,29,200/- (पन्द्रह लाख उन्तीस हजार दो सौ रुपये मात्र) है।

शिक्षा रैंकिंग मई 2026

कोन प्रथम, चोपन दूसरे, राँबटसगंज तीसरे स्थान पर, एक महीने में 22.96फीसदी सुधरा सोनभद्र का प्रदर्शन, छात्र उपस्थिति व निपुण मूल्यांकन में बढ़ी छलांग

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) साक्षरता अभियान में 74.57 फीसदी बेसिक शिक्षा विभाग प्रोग्रेस मॉनिटरिंग इंडेक्स में मई 2026 की रैंकिंग जारी हो गई है। कोन ब्लॉक ने 76.71फीसदी अंकों के साथ जनपद में पहला स्थान हासिल किया। बीईओ विश्वजीत कुमार के नेतृत्व में कोन ने छात्र उपस्थिति में 90.85फीसदी व निपुण विद्यार्थी सफलता अनुपात में 86.92फीसदी अंक प्राप्त किए। चोपन ब्लॉक 75.82फीसदी अंकों के साथ दूसरे स्थान पर रहा। बीईओ लोकेश कुमार मिश्रा के नेतृत्व में चोपन ने अप्रैल के 39.94फीसदी से 35.88फीसदी की सबसे बड़ी छलांग लगाई। उल्लास नवभारत

उपलब्धि दर्ज की। जिले का समग्र स्कोर अप्रैल के 39.03फीसदी से बढ़कर मई में 61.99फीसदी हो गया। निपुण स्कूल असेसमेंट 53.39फीसदी से 88.14फीसदी, विद्यार्थी मूल्यांकन 31.38फीसदी से 57.45फीसदी और छात्र उपस्थिति 16.93फीसदी से 59.66फीसदी पहुंच गई। नवीन नामांकन भी 55.89फीसदी से बढ़कर 72.03फीसदी हुआ। नागवा ने 78.72फीसदी नामांकन के साथ टॉप किया। हालांकि अधिगम संप्राप्ति 61.33फीसदी से घटकर 44.75फीसदी रह गई।

निपुण योग्य विद्यार्थियों का अनुपात भी 41.13फीसदी से 35.39फीसदी से बढ़कर 72.03फीसदी हुआ। जिला प्रशासन अब एफएलएन मिशन व रिमैडियल कक्षाओं पर फोकस करेगा।

अबल रहा। राँबटसगंज ब्लॉक ने बीईओ महेन्द्र मौर्या के नेतृत्व में 74.04फीसदी अंकों के साथ तीसरा स्थान पाया। नवीन नामांकन में 74.01फीसदी व छात्र उपस्थिति में 68.65फीसदी

अबल रहा। राँबटसगंज ब्लॉक ने बीईओ महेन्द्र मौर्या के नेतृत्व में 74.04फीसदी अंकों के साथ तीसरा स्थान पाया। नवीन नामांकन में 74.01फीसदी व छात्र उपस्थिति में 68.65फीसदी

ड्रिंक एंड ड्राइव पर सोनभद्र पुलिस सख्त, 545 वाहनों पर कार्रवाई, लोढ़ी टोल प्लाजा पर रात में चली सघन चेकिंग, सीओ ट्रैफिक के नेतृत्व में अभियान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक

पाकिंग, एचएसआरपी, प्रदूषण प्रमाण पत्र सहित अन्य नियम

मामले शामिल हैं। एक वाहन को सीज भी किया गया। इस



अभिषेक वर्मा के निर्देश पर सड़क सुरक्षा को लेकर चलाए जा रहे अभियान के तहत बुधवार की रात क्षेत्राधिकारी यातायात डॉ. चारु द्विवेदी के नेतृत्व में लोढ़ी टोल प्लाजा पर विशेष चेकिंग अभियान चलाया गया। यातायात प्रभारी नरेंद्र सिंह व टीम ने ड्रिंक एंड ड्राइव समेत तमाम नियम उल्लंघनों पर सख्त कार्रवाई की। अभियान में ड्रिंक एंड ड्राइव, फॉल्टी नंबर प्लेट, ओवर स्पीडिंग, बिना सीट बेल्ट, मोबाइल फोन का प्रयोग, रॉन्ग साइड ड्राइविंग, तीन सवारी, नो

टोइने वाले वाहन चालकों पर कार्रवाई की गई। 545 वाहनों पर हुई कार्रवाई- चेकिंग के दौरान कुल 545 वाहनों के खिलाफ कार्रवाई की गई। इनमें बिना हेलमेट के 231, बिना सीट बेल्ट के 09, मोबाइल फोन प्रयोग के 06, ड्रिंक एंड ड्राइव के 04, तीन सवारी के 52, रॉन्ग साइड के 43, हाई वॉल्यूम म्यूजिक/मोडिफाइड साइलेंसर/प्रदूषण के 17, नो पाकिंग के 105, डीएल के 21, बिना इश्योरेंस के 14, दोषपूर्ण नंबर प्लेट के 29, काली फिल्म/थार/लजरी गाड़ी के 04

दौरान संदिग्ध वाहनों व व्यक्तियों की गहन जांच की गई। वाहन चालकों को यातायात नियमों के पालन के लिए जागरूक किया गया और सड़क सुरक्षा की जानकारी दी गई। सोनभद्र पुलिस ने आमजन से अपील की है कि यातायात नियमों का पालन करें, शराब पीकर वाहन न चलाएं और सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करें। जनपद में सड़क सुरक्षा व कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए इस तरह की कार्रवाई निरंतर जारी रहेगी।

जनपद सोनभद्र में आँधी-तूफान, वट्कापात, ओलावृष्टि एवं भारी वर्षा की संभावना, प्रशासन सतर्क

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। भारत मौसम विज्ञान विभाग, लखनऊ द्वारा जारी

पर रहने तथा किसी भी आपात स्थिति से प्रभावी ढंग से निपटने हेतु आवश्यक तैयारियां

जारी दिशा-निर्देशों का पालन करें। उन्होंने कहा कि आंधी एवं वट्कापात के दौरान पेड़ों,



ताजा मौसम पूर्वानुमान एवं रेड अलर्ट के अनुसार जनपद सोनभद्र सहित पूर्वी उत्तर प्रदेश में आगामी 31 मई 2026 तक तेज आँधी-तूफान, मेघगर्जन, वट्कापात, ओलावृष्टि एवं भारी वर्षा होने की प्रबल संभावना व्यक्त की गई है। कुछ स्थानों पर 70 से 80 किलोमीटर प्रति घंटा की रफतार से तेज हवाएं चलने की चेतावनी भी जारी की गई है। जिलाधिकारी सोनभद्र ने समस्त संबंधित विभागों को हाई अलर्ट

सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। राजस्व, स्वास्थ्य, विद्युत, अग्निशमन, सिंचाई, नगर निकाय एवं आपदा प्रबंधन विभाग को आपसी समन्वय बनाकर त्वरित राहत एवं बचाव कार्य हेतु सतर्क रहने को कहा गया है। जिलाधिकारी ने जनपदवासियों से अपील करते हुए कहा है कि खराब मौसम के दौरान अत्यंत आवश्यक होने पर ही घरों से बाहर निकलें तथा प्रशासन एवं मौसम विभाग द्वारा

बिजली के खंभों एवं कच्चे मकानों से दूर रहें। खुले मैदान, खेत, तालाब एवं जलाशयों के पास न जाएं तथा बच्चों एवं पशुओं को सुरक्षित स्थान पर रखें। किसी भी आपदा अथवा आपात स्थिति की सूचना तत्काल जिला आपदा नियंत्रण कक्ष के दूरभाष नम्बर 05444-297645 अथवा टोलफ्री नम्बर 1077 पर उपलब्ध कराएं। जनपद प्रशासन द्वारा स्थिति की निरंतर निगरानी की जा रही है।

थाना शक्तिनगर पुलिस की त्वरित कार्यवाही, गैर इरादतन हत्या का आरोपी आला कल सहित गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। घटना का विवरण- बीते गुरुवार को थाना शक्तिनगर पर प्राथिनी फुलमती देवी पत्नी रामजीवन पनिका निवासी ग्राम कछनी थाना बैदन जनपद सिंगरौली (म090) द्वारा सूचना दी गई कि उसकी पुत्री आशा देवी उम्र लगभग 45 वर्ष अपने पति महेन्द्र पुत्र दशरथ निवासी भलुआ टोला थाना ओबरा जनपद सोनभद्र के साथ थाना शक्तिनगर क्षेत्र में किराये के मकान में रह रही थी। दिनांक 27.05.2026 की रात्रि अभियुक्त महेन्द्र शराब के नशे में घर आया, जहां पति-पत्नी के मध्य विवाद हो गया। आरोप है कि विवाद के दौरान अभियुक्त महेन्द्र से गला दबा देने के कारण आशा देवी अचेत हो गई, जिसकी बाद में मृत्यु हो गई। प्रापत तहरीर के आधार पर थाना शक्तिनगर पर मु0अ0सं0 108/2026 धारा 105 बीएनएस बनाम महेन्द्र पुत्र दशरथ पंजीकृत किया गया। पुलिस द्वारा कृत कार्यवाही- पुलिस अधीक्षक सोनभद्र श्री अभिषेक वर्मा के निर्देशन में जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में, अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय अनिल कुमार एवं क्षेत्राधिकारी पिपरी श्री हर्ष पाण्डेय के पर्यवेक्षण तथा प्रभारी निरीक्षक शक्तिनगर सत्येन्द्र कुमार राय के नेतृत्व में थाना शक्तिनगर पुलिस द्वारा तत्काल मौके पर पहुंचकर शव को कब्जे में लेकर पंचायतनामा की कार्यवाही की गई तथा पोस्टमार्टम हेतु भेजा गया। विवेचना के दौरान पुलिस टीम द्वारा त्वरित एवं प्रभावी कार्यवाही करते हुए अभियुक्त महेन्द्र गुप्ता को घटना में प्रयुक्त आला कल (एक अदद लेगी) के साथ गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तारी के उपरान्त अभियुक्त के विरुद्ध नियमानुसार आवश्यक विधिक कार्यवाही करते हुए मा0 न्यायालय प्रेषित किया जा रहा है। गिरफ्तार अभियुक्त का विवरण-महेन्द्र गुप्ता पुत्र स्व0 दशरथ निवासी हाल पता खडिया बाजार थाना शक्तिनगर जनपद सोनभद्र, स्थायी पता ग्राम भलुआ टोला थाना ओबरा जनपद सोनभद्र, उम्र करीब 45 वर्ष।

सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। राजस्व, स्वास्थ्य, विद्युत, अग्निशमन, सिंचाई, नगर निकाय एवं आपदा प्रबंधन विभाग को आपसी समन्वय बनाकर त्वरित राहत एवं बचाव कार्य हेतु सतर्क रहने को कहा गया है। जिलाधिकारी ने जनपदवासियों से अपील करते हुए कहा है कि खराब मौसम के दौरान अत्यंत आवश्यक होने पर ही घरों से बाहर निकलें तथा प्रशासन एवं मौसम विभाग द्वारा

बिजली के खंभों एवं कच्चे मकानों से दूर रहें। खुले मैदान, खेत, तालाब एवं जलाशयों के पास न जाएं तथा बच्चों एवं पशुओं को सुरक्षित स्थान पर रखें। किसी भी आपदा अथवा आपात स्थिति की सूचना तत्काल जिला आपदा नियंत्रण कक्ष के दूरभाष नम्बर 05444-297645 अथवा टोलफ्री नम्बर 1077 पर उपलब्ध कराएं। जनपद प्रशासन द्वारा स्थिति की निरंतर निगरानी की जा रही है।

राँबटसगंज रेलवे फाटक ओवरब्रिज: वैकल्पिक रास्ते की मांग तेज

भाजपा पूर्व जिलाध्यक्ष बोले- 4 लाख आबादी की लाइफलाइन है मार्ग, सूचना व व्यवस्था के बिना कार्य शुरू न हो

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। राँबटसगंज नगर

है। श्री तिवारी ने कहा कि जुलाई से स्कूल खुलने के बाद बच्चों

श्रीवास्तव, आशीष श्रीवास्तव, अभिषेक श्रीवास्तव, सुजन



स्थित रेलवे फाटक पर प्रस्तावित ओवरब्रिज निर्माण को लेकर जनता में उत्साह के साथ नाराजगी भी है। आरोप है कि रेलवे विभाग व स्थानीय प्रशासन ने कार्य शुरू करने से पहले न तो कोई सूचना जारी की और न ही वैकल्पिक रास्ते की व्यवस्था की। भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष धर्मवीर तिवारी ने कहा कि राँबटसगंज से खलियारी होते हुए बिहार को जोड़ने वाली यह सड़क हजारों गांवों और करीब 4 लाख की आबादी के लिए लाइफलाइन है। बिना वैकल्पिक रास्ते के कार्य शुरू करना गलत

को सबसे ज्यादा दिक्कत होगी। रात में अचानक कोई बीमार हो गया तो नजदीक में रास्ता न होने से परेशानी बढ़ सकती है। पैदल व बाइक सवारों के लिए रास्ता आवश्यक है। उन्होंने मांग की कि रेलवे विभाग पहले से एडवाइजरी जारी करे कि रास्ता कितने दिन बंद रहेगा और वैकल्पिक व्यवस्था क्या होगी। पूर्व जिलाध्यक्ष ने पूरे मामले को लेकर जिलाधिकारी से वार्ता की। उनके अनुसार डीएम ने पैदल व बाइक से चलने वालों के लिए वैकल्पिक व्यवस्था का आश्वासन दिया है। इस दौरान रमेश

श्रीवास्तव, राज कुमार सोनी, सचिव कुमार सोनी, भरत सोनी, दिनेश पांडेय, विष्णु सोनी, पुरषोत्तम सोनी, लवकुश सोनी, विकास केसरी, गणेश केशरी, विनोद केशरी, मुकुंद केशरी, शरद केशरी, रवि केशरी, बच्चा केसरी, राजा चंदन जयसवाल, सूर्या मौर्या, सत्यम पांडेय, विवेकानंद पांडेय, प्रमोद जयसवाल, संतोष सोनी, प्रमोद सोनी, आयुष सोनी, बजरंगी सोनी, बालचंद्र कर्नाजिया, अश्वज सोनी, रोहित राज सोनी, शिवम राय, महेश मिश्रा, दिनेश मिश्रा, मनीष, मुन्ना तिवारी समेत अन्य लोग उपस्थित रहे।

हर्षोल्लास से मनाई गई ईद-उल-अजहा, कुर्बानी का त्योहार, ईदगाह में अदा की गई नमाज, मौलाना ने दिया आपसी भाईचारे का संदेश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। शहर व ग्रामीण क्षेत्रों

साहब ने कहा कि कुर्बानी दीन की शान है। अल्लाह ताला ने

हजरत इस्माइल की यादगार के तौर पर हर साल ईद-उल-अजहा



में गुरुवार को ईद-उल-अजहा का त्योहार अकीदत और पाकीजगी के साथ मनाया गया। सुबह 7:30 बजे नगर की ईदगाह पर नमाज अदा की गई। हजारों की संख्या में लोगों ने एक-दूसरे से गले मिलकर मुबारकबाद दी। नमाज के इमाम मौलाना तौफीक अहमद ने अदा कराई। नमाजियों को संबोधित करते हुए मौलाना

अपने खलील हजरत इब्राहीम अलैहिससलाम की आजमाइश के लिए उनसे सबसे महबूब चीज की कुर्बानी तलब की, तो उन्होंने अपने लखत-ए-जिगर हजरत इस्माइल अलैहि की कुर्बानी पेश की। अल्लाह को यह अदा पसंद आई और इस्माइल की जगह दुम्बा की कुर्बानी कराई। उन्होंने कहा कि हजरत इब्राहीम व

मनाई जाती है। नमाज की व्यवस्था सदर मुतवल्ली अब्बास ने कराई। इस अवसर पर मजहर रब्बानी, सदर मुस्ताक खान, हिदायत उल्ला खान, रोशन खान, इमाम अली, सिद्दीक अहमद, नवाब अली, जाहिर खान सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे। त्योहार के दौरान पुलिस-प्रशासन भी मुस्तैद रहा।

बी0एड0 संयुक्त प्रवेश परीक्षा को लेकर प्रशासन अलर्ट नकलविहीन, शांतिपूर्ण एवं पारदर्शी परीक्षा सम्पन्न कराने हेतु व्यापक तैयारियां पूर्ण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। उत्तर प्रदेश बी0एड0

जिलाधिकारी वि0/रा0 ने कहा कि राजकीय स्नातकोत्तर

लिए उन्हें कोषागार के डबल लॉक में सुरक्षित रखा जाएगा तथा



संयुक्त प्रवेश परीक्षा 2026-28 को सफुल, नकलविहीन एवं पारदर्शी ढंग से सम्पन्न कराने के लिए जिला प्रशासन पूरी तरह सतर्क एवं प्रतिबद्ध है। जिलाधिकारी के निर्देशन में परीक्षा की शुचिता एवं गोपनीयता बनाए रखने हेतु व्यापक तैयारियां सुनिश्चित की गई हैं तथा संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश जारी कर दिए गए हैं। जिलाधिकारी द्वारा परीक्षा के सफल संचालन हेतु अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) श्री वागीश कुमार शुक्ल को नगर प्रभारी नामित किया गया है। इस परीक्षा के सफल संचालन हेतु आज कलेक्ट्रेट सभागार में अपर जिलाधिकारी वि0/रा0 श्री वागीश कुमार शुक्ल की अध्यक्षता में बैठक की गयी, बैठक के दौरान अपर

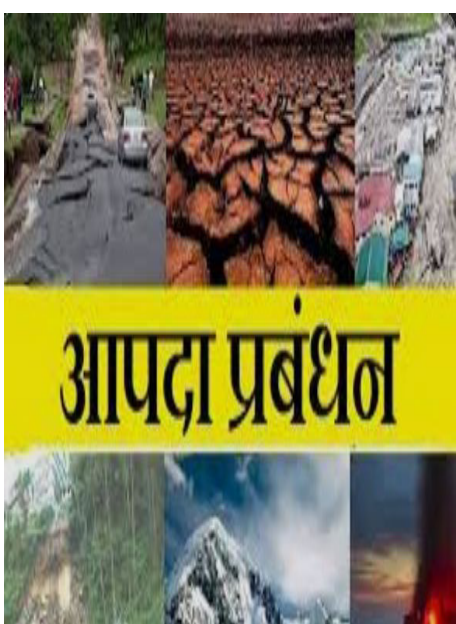
महाविद्यालय ओबरा के प्राचार्य प्रो0 (डॉ0) प्रमोद कुमार को जनपद नोडल समन्वयक तथा राजकीय मॉडल महाविद्यालय पवनी कला के प्राचार्य डॉ0 परवेज आलम को उप नोडल अधिकारी की जिम्मेदारी सौंपी गई है। परीक्षा केन्द्रों पर निष्पक्ष एवं सुव्यवस्थित परीक्षा संचालन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से एक प्रतिनिधियों की तैनाती गयी है। यह परीक्षा दिनांक 31 मई, 2026 को प्रथम पाली सुबह 09:00 से 12:00 बजे, द्वितीय पाली में 02:00 बजे से 05:00 बजे तक, जनपद में 06 परीक्षा केन्द्र बनाये गये हैं, इस परीक्षा में कुल 2186 परीक्षार्थी सम्मिलित होंगे। प्रत्येक परीक्षा केन्द्र पर वागीश कुमार शुक्ल की अध्यक्षता में बैठक की गयी, बैठक के दौरान अपर

परीक्षा सामग्री को निर्धारित समय पर परीक्षा केन्द्रों तक पहुंचाने हेतु विशेष व्यवस्था की गई है। पुलिस अधीक्षक द्वारा सभी परीक्षा केन्द्रों पर पर्याप्त पुलिस बल तैनात करने के निर्देश दिए गए हैं, जिससे परीक्षा शांतिपूर्ण वातावरण में सम्पन्न कराई जा सके। इससे अतिरिक्त संवेदनशील स्थलों पर विशेष निगरानी रखी जाएगी तथा परीक्षा से संबंधित गोपनीयता अभिलेखों एवं सामग्री की सुरक्षा हेतु कड़े प्रबंध किए गए हैं। जिला प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि शासन की मंशा के अनुरूप परीक्षा को पूर्ण पारदर्शिता, निष्पक्षता एवं शुचिता के साथ सम्पन्न कराया जाएगा तथा किसी भी प्रकार की अनियमितता पाए जाने पर कठोर कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी।

कार्यालय जिलाधिकारी, जनपद सोनभद्र निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। माननीय मुख्यमंत्री जी के निर्देशों के क्रम में जनपद में संभावित प्रतिकूल मौसम

सीएचसी, पीएचसी एवं हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर पर आवश्यक दवाइयों, प्राथमिक उपचार सामग्री, एम्बुलेंस एवं आपात



परिस्थितियों/भारी वर्षा/आँधी-तूफान/अतिवृष्टि/आकाशवाणी बिजली आदि के दृष्टिगत जनसामान्य की सुरक्षा, जनहानि एवं संपत्ति की क्षति को रोकने तथा त्वरित राहत एवं बचाव कार्यवाही सुनिश्चित किए जाने हेतु निम्न निर्देश निर्गत किए जाते हैं- 1. समस्त संबंधित विभाग मौसम विभाग द्वारा जारी पूर्वानुमान एवं चेतावनियों की सतत निगरानी सुनिश्चित करें तथा प्राप्त अलर्ट के अनुसार त्वरित कार्यवाही करें। 2. जनपद स्तरीय नियंत्रण कक्ष/आपदा नियंत्रण कक्ष को पूर्ण सक्रिय अवस्था में रखा जाए तथा 24x7 मॉनिटरिंग सुनिश्चित की जाए। 3. समस्त उप जिलाधिकारी, तहसीलदार, खण्ड विकास अधिकारी, अधिशासी अधिकारी नगर निकाय एवं संबंधित अधिकारी अपने-अपने क्षेत्र में संवेदनशील स्थानों का भ्रमण कर आवश्यक एहतियाती व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें। 4. पुलिस, स्वास्थ्य, विद्युत, सिंचाई, लोक निर्माण, नगर निकाय, राजस्व, अग्निशमन, आपदा प्रबंधन एवं अन्य संबंधित विभाग आपसी समन्वय स्थापित करते हुए त्वरित प्रतिक्रिया तंत्र को सक्रिय रखें। 5. संभावित वृक्ष गिरने, विद्युत पोल/तार क्षतिग्रस्त होने, सड़क अवरोध, भवन क्षति अथवा अन्य आपदा संबंधी घटनाओं से निपटने हेतु आवश्यक संसाधन एवं मानवबल अग्रिम रूप से उपलब्ध रखा जाए। 6. स्वास्थ्य विभाग द्वारा समस्त जिला अस्पताल,

चिकित्सा सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। 7. नगर निकायों द्वारा कमजोर/क्षतिग्रस्त संरचनाओं, होर्डिंग्स आदि के संबंध में आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। 8. विद्युत विभाग द्वारा जर्जर विद्युत तारों, पोलों एवं विद्युत आपूर्ति व्यवस्था की समीक्षा करते हुए आपातकालीन मरम्मत दलों को सक्रिय रखा जाए। 9. आमजन को सोशल मीडिया, प्रचार-प्रसार वाहन, सार्वजनिक उद्घोषणा, ग्राम पंचायतों, विद्यालयों एवं अन्य माध्यमों से मौसम संबंधी सावधानियों एवं एडवाइजरी का व्यापक प्रचार-प्रसार कराया जाए। 10. समस्त विभाग अपने-अपने विभागीय आपदा प्रबंधन प्लान की समीक्षा कर अद्यतन कार्ययोजना तैयार रखें तथा किसी भी आपात स्थिति में तत्काल कार्यवाही सुनिश्चित करें। 11. किसी भी आपदा/दुर्घटना की सूचना प्राप्त होने पर त्वरित राहत एवं बचाव कार्य संचालित करते हुए जनहानि एवं संपत्ति की क्षति को न्यूनतम करने हेतु प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। 12. समस्त संबंधित अधिकारी जनपद स्तर पर स्थिति की सतत समीक्षा करते हुए आवश्यक सूचनाएँ तत्काल उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। उपरोक्त निर्देशों का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित किया जाए। किसी भी प्रकार की शिथिलता पाए जाने पर संबंधित अधिकारी/कर्मचारी उत्तरदायी होंगे।

रेलवे ओवरब्रिज निर्माण कार्य के दौरान आवागमन व्यवस्था के संबंध में किया गया निरीक्षण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जिलाधिकारी चर्चित

श्री रणधीर मिश्रा एवं रेलवे विभाग के अधिकारियों की संयुक्त टीम



नागरिकों द्वारा राँबटसगंज-पन्नूगंज मार्ग स्थित रेलवे क्रॉसिंग पर प्रस्तावित ओवरब्रिज निर्माण कार्य के दौरान फाटक बंद होने से आमजन को होने वाली संभावित आवागमन समस्याओं के संबंध में प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया गया। प्रार्थना पत्र में अवगत कराया गया कि उक्त मार्ग बिहार को जोड़ने वाला अत्यंत महत्वपूर्ण संपर्क मार्ग है तथा रेलवे क्रॉसिंग के पूर्वी क्षेत्र की अधिक आबादी का प्रतिदिन आवागमन इसी मार्ग से होता है। ऐसे में ओवरब्रिज निर्माण के दौरान वैकल्पिक, पैदल व बाइक हेतु मार्ग व्यवस्था सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है। जिलाधिकारी ने मामले को गंभीरता से संभाल में लेते हुए उपजिलाधिकारी राँबटसगंज अश्वनी कुमार, सी0ओ0 सीटी

रेलवे विभाग की संयुक्त टीम द्वारा स्थल निरीक्षण कर स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं नागरिकों से वार्ता की गई। निरीक्षण के दौरान रेलवे ओवरब्रिज निर्माण स्थल के समीप एक वैकल्पिक स्थान चिन्हित किया गया, जहां से आमजन के पैदल आवागमन एवं बाइक संचालन की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जा सकती है। प्रस्तावित व्यवस्था पर उपस्थित जनप्रतिनिधियों एवं स्थानीय लोगों ने सहमति व्यक्त की तथा इसे जनहित में उपयुक्त बताया। रेलवे विभाग के अधिकारियों द्वारा भी उक्त व्यवस्था पर सहमति प्रदान करते हुए शीघ्र आवश्यक कार्यवाही करने का आश्वासन दिया गया।

ऑफिस में चल रही हैं छंटनी, डर है नौकरी न चली जाए, बॉस मीटिंग के लिए बुलाए तो हार्टबीट बढ़ जाती है, इस एंगजाइटी से कैसे निपटें

नयी दिल्ली। आज के ऑफिस पॉलिटिक्स और गला काट प्रतियोगिता वाले महोल में एंगजाइटी का होना बड़ी बात नहीं।

भावनाएं और व्यवहार एक-दूसरे को कैसे प्रभावित करते हैं। सेल्फ-गैसलाइटींग-लेकिन 'सेल्फ-गैसलाइटींग' इससे अलग स्थिति

है। अपने टोटल स्कोर की एनालिसिस करें। इस एसेसमेंट टेस्ट के बाद खुद से ये दो सवाल और पूछें-क्या मैं अपने डर को

नौकरी चली जाए।' भावना: बहुत ज्यादा डर महसूस होना शारीरिक प्रतिक्रिया: दिल की धड़कन तेज होना, पेट में घबराहट। व्यवहार: चुप हो जाना, घर पर चिड़चिड़ापन। खुद से कही बात: 'मैं शायद बात को जरूरत से ज्यादा बढ़ा रहा हूँ।' इस अभ्यास का उद्देश्य अपने डर से लड़ना नहीं, बल्कि उसे पहचानना और समझना है। जब व्यक्ति अपने तनाव के संकेतों को समझने लगता है, तो वह यह भी पहचान पाता है कि किन परिस्थितियों में उसका मन और शरीर सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ तनाव के दौरान शरीर के संकेतों पर ध्यान देने और गहरी, धीमी सांस लेने को कहते हैं। साथ ही वे खुद को शांत करने वाले छोटे अभ्यास अपनाने की सलाह देते हैं। सप्ताह 2-3 तथ्य और आशंका में फर्क समझना जब भी मन में अचानक डर या घबराहट बढ़े, उस समय खुद से ये तीन सवाल पूछिए- इस समय वास्तविक तथ्य क्या है? मैं अपनी तरफ से कौन-सा अनुमान जोड़ रहा हूँ? स्थिति को देखने का सबसे संतुलित तरीका क्या हो सकता है? उदाहरण के लिए- तथ्य: एक मीटिंग बुलाई गई है। अनुमान: शायद यह नौकरी खत्म करने से जुड़ी मीटिंग है। संतुलित सोच: कंपनी में छंटनी हुई है, इसलिए डर लगाना स्वाभाविक है। लेकिन अभी तक मेरे काम को लेकर कोई नकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं मिली है। यह अभ्यास मन को हर परिस्थिति का सबसे बुरा परिणाम मान लेने की आदत से बाहर निकालने में मदद करता है। कई बार तनाव में व्यक्ति बिना किसी ठोस सबूत के नकारात्मक निष्कर्ष निकाल लेता है। साइकोलॉजिकल मेथड ऐसे ही नेगेटिव पैटर्न को पहचानने और उन्हें बैलेंस करने पर जोर देते हैं। सप्ताह 3-4 खुद को गलत ठहराने की आदत को चुनौती देना जब मन यह कहे- 'मुझे ऐसा महसूस नहीं करना चाहिए।' मैं बेवजह डर रहा हूँ तो खुद को डांटने के बजाय कुछ संतुलित और मददगार बातें याद दिलाइए। जैसे- 'इस परिस्थिति में मेरा डर स्वाभाविक है।' 'घबराहट केवल एक संकेत है, अंतिम सच्चाई नहीं है।' 'मैं अपने डर को पूरी तरह सच माने बिना स्वीकार कर सकता हूँ।' 'अनिश्चितता असहज जरूर होती है, लेकिन हर बार खतरे का संकेत नहीं होती।' इन बातों को हर दिन कुछ मिनट शांत होकर लिखिए या धीरे-धीरे दोहराइए। इसका उद्देश्य मन को यह सिखाना है कि डर महसूस होना कमजोरी नहीं, बल्कि तनावपूर्ण परिस्थितियों के प्रति सामान्य मानवीय प्रतिक्रिया है। इसके साथ दिन में दो बार गहरी, धीमी सांस लेने का अभ्यास करिए। शरीर को शांत करने वाली छोटी-छोटी रिटैलिंग्स प्रैक्टिस करिए। सप्ताह 4-: व्यवहार में छोटे बदलाव करना मीटिंग या बॉस से बात करने से पहले दो मिनट रुककर गहरी सांस लें और शरीर को ढीला छोड़ें। इससे तनाव कम होता है। बार-बार इंग्रै, लोगों के हावभाव या ऑफिस की अफवाहों पर नजर रखना कम करें।



लगातार ले-ऑफ (छंटनी) के माहौल में काम करना सिर्फ प्रोफेशनल चैलेंज नहीं, बल्कि इमोशनल चैलेंज भी है। जब ऑफिस में बार-बार लोगों की नौकरी जाती दिखे, तो मन का एलर्ट मोड में रहना स्वाभाविक है। कई बार लोग बाहर से सामान्य दिखते हैं, लेकिन भीतर लगातार डर, असुरक्षा से लड़ रहे होते हैं। इसी विषय को समझे एक्सपर्ट- डॉ. द्रोण शर्मा, कंसल्टंट साइकोलॉजिस्ट, आयरलैंड, यूके। यूके, आयरिश और जिब्राल्टर मेडिकल काउंसिल के मेबर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मैं 38 साल का हूँ और पिछले 10 साल से एक प्राइवेट कंपनी में काम कर रहा हूँ। पिछले एक साल से कंपनी में लगातार ले-ऑफ हो रहे हैं। जिससे मेरे मन में हमेशा यह डर बना रहता है कि कहीं मेरी नौकरी भी न चली जाए। हालांकि अभी तक मेरे परफॉर्मंस को लेकर कोई नकारात्मक फीडबैक नहीं मिला है, लेकिन फिर भी मैं हर समय असुरक्षित महसूस करता हूँ। ऑफिस में जब भी कोई मीटिंग होती है या बॉस अचानक बुलाते हैं, तो दिल की धड़कन तेज हो जाती है, नेगेटिव विचार आने लगते हैं। इस टेंशन में मैं चिड़चिड़ा हो गया हूँ, परिवार के साथ रिश्ते प्रभावित हो रहे हैं। मैं क्या करूँ? समस्या तब और बढ़ जाती है, जब व्यक्ति अपने ही डर को 'ओवररिएक्शन' कहकर डिस्मिस करने लगता है। यानी एंगजाइटी के साथ सेल्फ-क्रिटिसिज्म भी जुड़ जाता है। यही वह स्थिति है, जहाँ छंटनी का डर धीरे-धीरे मेटल एग्जॉशन और सेल्फ-गैसलाइटींग का रूप लेने लगता है। ऐसे में यह समझना बहुत जरूरी है कि हर डर गलत नहीं होता, लेकिन हर डर सच भी नहीं होता। कंपनी में लगातार छंटनी होना किसी भी कर्मचारी के लिए तनाव, असुरक्षा और अपने भविष्य को लेकर डर का कारण बन सकता है। इसलिए यह सोचना कि 'कहीं अगला मैं न होऊँ' अपने आप में अचानक नहीं है। एंगजाइटी अक्सर भविष्य के खतरे को पहले से महसूस कराने लाती है। इस स्थिति में जो डर महसूस हो रहा है, वह पूरी तरह असामान्य नहीं है। जब किसी कंपनी में लगातार कर्मचारियों की छंटनी हो रही हो, तो मन का सतर्क हो जाना स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। यह डर किसी कल्पना से नहीं, बल्कि आसपास दिख रही अनिश्चितता से जुड़ा होता है। हाँ, कई बार मन खतरे की आशंका को वास्तविकता से थोड़ा बड़ा मानने लगता है। मान लीजिए, बॉस ने अचानक मीटिंग के लिए बुलाया। उसी क्षण दिल की धड़कन तेज हो गई और मन में विचार आया- 'कहीं अब मेरी नौकरी पर तो खतरा नहीं?' यह घबराहट इस बात का संकेत है कि दिमाग हर अनिश्चित परिस्थिति को संभावित खतरे की तरह पढ़ने लगा है। इसका मतलब यह नहीं कि जो आशंका मन में आ रही है, वह सच ही हो। बल्कि यह केवल शरीर और मन की तनावपूर्ण माहौल के प्रति संवेदनशील प्रतिक्रिया है। मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार, चिंता अक्सर उन बातों से जुड़ी होती है जो भविष्य में हो सकती हैं। वहीं, व्यवहार और सोच पर आधारित मनोचिकित्सीय पद्धतियाँ यह समझने में मदद करती हैं कि किसी घटना के बाद हमारे विचार,

इसमें व्यक्ति अपने डर को समझने या संभालने की कोशिश करने के बजाय खुद को ही गलत ठहराने लगता है। वह मन ही मन

समझने की कोशिश कर रहा हूँ, या उस डर के लिए खुद को ही दोष दे रहा हूँ? क्या मैं यह स्वीकार कर पा रहा हूँ कि 'मेरा

टेस्ट के सवाल

1. मैं अपने डर को 'बेवजह' मानकर खारिज करता हूँ।
2. सोचता हूँ कि मैं स्टॉंग हूँ, मुझे घबराहट नहीं होनी चाहिए।
3. मैं अपनी एंगजाइटी को समझने की बजाय खुद को डांटता हूँ।
4. मैं फैक्ट्स और डर को अलग रखने की बजाय खुद पर शक करता हूँ।
5. मैं खुद से कहता हूँ, "जब कुछ हुआ नहीं, तो क्यों डरना चाहिए।"
6. मैं अपनी तेज हार्टबीट या घबराहट पर शर्म महसूस करता हूँ।
7. मैं रीअशयोरेंस के बाद भी खुद को सेफ महसूस नहीं होने देता।
8. मैं अपना स्ट्रेस फैमिली पर निकालता हूँ।
9. मैं मान लेता हूँ कि कुछ बुरा ही होने वाला है।
10. मैं मदद नहीं मांगता क्योंकि मुझे परेशानी वैलिड नहीं लगती।
11. मैं अपने इमोशनल रिस्पॉन्स को कमजोरी समझता हूँ।
12. मैं वर्क स्ट्रेस को नाम देने की बजाय उसे कमजोरी मानता हूँ।

सोचता है- 'अभी तक मुझे निकाला तो नहीं गया, फिर मैं इतना क्यों डर रहा हूँ?' - 'मैं बेवजह बात को बढ़ा रहा हूँ।' - 'समस्या मेरे स्वभाव में ही है।' यानी शुरुआत में समस्या केवल चिंता थी, लेकिन धीरे-धीरे व्यक्ति अपनी ही भावनाओं और अनुभवों को नकारने लगता है। यही स्थिति 'सेल्फ-गैसलाइटींग' कहलाती है। यह कोई आधिकारिक मानसिक बीमारी नहीं, बल्कि ऐसा व्यवहार है, जिसमें इंसान अपनी भावनाओं को महत्वहीन या गलत मानने लगता है। इसे एक सरल उदाहरण से समझिए- अगर बॉस अचानक मीटिंग के लिए बुलाए और मन में तुरंत यह डर आए कि 'कहीं अब मेरी नौकरी पर खतरा तो नहीं', तो यह सामान्य चिंता है। लगातार छंटनी देखने के बाद ऐसा डर लगना स्वाभाविक है। लेकिन जब व्यक्ति उस डर के लिए खुद को कोसने लगे- 'मैं कितना बेवकूफ हूँ, मुझे ऐसा महसूस नहीं करना चाहिए।' तब वह अपनी ही भावनाओं को ही गलत साबित करने लगता है। दोनों स्थितियों के बीच बड़ा अंतर ये है कि- चिंता कहती है- 'शायद कुछ गलत हो सकता है।' 'सेल्फ-गैसलाइटींग कहती है- 'तुम गलत हो कि तुम्हें ऐसे डर लग रहा है।' पहली स्थिति में केवल डर होता है, लेकिन दूसरी स्थिति में डर के साथ अपरधबोध और शर्म भी जुड़ जाती है। क्या आप खुद को गैसलाइट कर रहे हैं? करें सेल्फ एसेसमेंट टेस्ट- यहां मैं आपको एक सेल्फ एसेसमेंट टेस्ट दे रहा

हूँ। अपने टोटल स्कोर की एनालिसिस करें। इस एसेसमेंट टेस्ट के बाद खुद से ये दो सवाल और पूछें-क्या मैं अपने डर को नौकरी चली जाए।' भावना: बहुत ज्यादा डर महसूस होना शारीरिक प्रतिक्रिया: दिल की धड़कन तेज होना, पेट में घबराहट। व्यवहार: चुप हो जाना, घर पर चिड़चिड़ापन। खुद से कही बात: 'मैं शायद बात को जरूरत से ज्यादा बढ़ा रहा हूँ।' इस अभ्यास का उद्देश्य अपने डर से लड़ना नहीं, बल्कि उसे पहचानना और समझना है। जब व्यक्ति अपने तनाव के संकेतों को समझने लगता है, तो वह यह भी पहचान पाता है कि किन परिस्थितियों में उसका मन और शरीर सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ तनाव के दौरान शरीर के संकेतों पर ध्यान देने और गहरी, धीमी सांस लेने को कहते हैं। साथ ही वे खुद को शांत करने वाले छोटे अभ्यास अपनाने की सलाह देते हैं। सप्ताह 2-3 तथ्य और आशंका में फर्क समझना जब भी मन में अचानक डर या घबराहट बढ़े, उस समय खुद से ये तीन सवाल पूछिए- इस समय वास्तविक तथ्य क्या है? मैं अपनी तरफ से कौन-सा अनुमान जोड़ रहा हूँ? स्थिति को देखने का सबसे संतुलित तरीका क्या हो सकता है? उदाहरण के लिए- तथ्य: एक मीटिंग बुलाई गई है। अनुमान: शायद यह नौकरी खत्म करने से जुड़ी मीटिंग है। संतुलित सोच: कंपनी में छंटनी हुई है, इसलिए डर लगाना स्वाभाविक है। लेकिन अभी तक मेरे काम को लेकर कोई नकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं मिली है। यह अभ्यास मन को हर परिस्थिति का सबसे बुरा परिणाम मान लेने की आदत से बाहर निकालने में मदद करता है। कई बार तनाव में व्यक्ति बिना किसी ठोस सबूत के नकारात्मक निष्कर्ष निकाल लेता है। साइकोलॉजिकल मेथड ऐसे ही नेगेटिव पैटर्न को पहचानने और उन्हें बैलेंस करने पर जोर देते हैं। सप्ताह 3-4 खुद को गलत ठहराने की आदत को चुनौती देना जब मन यह कहे- 'मुझे ऐसा महसूस नहीं करना चाहिए।' मैं बेवजह डर रहा हूँ तो खुद को डांटने के बजाय कुछ संतुलित और मददगार बातें याद दिलाइए। जैसे- 'इस परिस्थिति में मेरा डर स्वाभाविक है।' 'घबराहट केवल एक संकेत है, अंतिम सच्चाई नहीं है।' 'मैं अपने डर को पूरी तरह सच माने बिना स्वीकार कर सकता हूँ।' 'अनिश्चितता असहज जरूर होती है, लेकिन हर बार खतरे का संकेत नहीं होती।' इन बातों को हर दिन कुछ मिनट शांत होकर लिखिए या धीरे-धीरे दोहराइए। इसका उद्देश्य मन को यह सिखाना है कि डर महसूस होना कमजोरी नहीं, बल्कि तनावपूर्ण परिस्थितियों के प्रति सामान्य मानवीय प्रतिक्रिया है। इसके साथ दिन में दो बार गहरी, धीमी सांस लेने का अभ्यास करिए। शरीर को शांत करने वाली छोटी-छोटी रिटैलिंग्स प्रैक्टिस करिए। सप्ताह 4-: व्यवहार में छोटे बदलाव करना मीटिंग या बॉस से बात करने से पहले दो मिनट रुककर गहरी सांस लें और शरीर को ढीला छोड़ें। इससे तनाव कम होता है। बार-बार इंग्रै, लोगों के हावभाव या ऑफिस की अफवाहों पर नजर रखना कम करें।

हर संकेत में खतरा ढूँढना चिंता बढ़ाता है। अपने अच्छे काम, मिली सराहना और चल रहे जरूरी कामों की एक सूची बनाकर रखें। यह वास्तविक स्थिति याद दिलाने में मदद करता है। परिवार से साफ कहें- 'काम को लेकर मैं तनाव में हूँ, मेरा चिड़चिड़ापन आप लोगों को वजह से नहीं है।' साथ ही, चिंता के लिए दिन में केवल 15-20 मिनट का तय समय रखें। बाकी समय उसे बाद के लिए टालने की कोशिश करें। अगर डर और घबराहट छह महीने या उससे ज्यादा समय से लगातार बनी हुई है और उसका असर नींद, काम, पारिवारिक रिश्तों या सेहत पर साफ दिखने लगा है। तो मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ से सलाह लेना जरूरी हो सकता है। अंतिम बात-लगातार छंटनी के माहौल में डर और असुरक्षा महसूस होना स्वाभाविक है। जरूरी यह है कि व्यक्ति अपने डर को समझे, लेकिन खुद को उसके लिए दोषी न ठहराए। सही सोच, छोटे व्यवहारिक बदलाव और समय पर मदद मांगकर एंगजाइटी को बेहतर तरीके से हैंडल किया जा सकता है।

महिला टी-20 भारत ने इंग्लैंड को 38 रन से हराया, जेमिमा और यास्तिका की फिफ्टी

चेम्सफोर्ड। भारतीय महिला टीम ने टी-20 सीरीज के पहले

विवेकट लिए। टॉस हारकर बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय

ने 31 गेंदों में फिफ्टी पूरी की। जेमिमा और यास्तिका ने तीसरे

बनाया। जोन्स की फिफ्टी, इंग्लैंड हारी-189 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए इंग्लैंड की शुरुआत खराब रही और टीम 37 रन पर 2 विकेट गंवा चुकी थी। इसके बाद एमी जोन्स और हीथर नाइट ने 64 रन की साझेदारी की। एमी जोन्स ने 48 गेंदों में 67 रन बनाए, लेकिन उन्हें दूसरे छोर से साथ नहीं मिला। हीथर नाइट इंग्लैंड की ओर से सभी फॉर्मेट में सबसे ज्यादा 310 मैन खेले वाली खिलाड़ी बन गईं। डेब्यू मैच में नंदनी शर्मा ने पहले ही ओवर में 3 विकेट लिए- डेब्यू कर रही नंदनी शर्मा ने अपने पहले ओवर में 3 विकेट लिए। उन्होंने एमी जोन्स और डैनी गिब्सन को लगातार गेंदों पर शेफाली वर्मा के हाथों कैच कराया। नंदनी हैंटिक पर धों, लेकिन चार्ली डीन ने अगली गेंद रोक ली। इसके दो गेंद बाद नंदनी ने इसी वॉग को बोल कर मैच भारत के पक्ष में कर दिया। इंग्लैंड इसके बाद वापसी नहीं कर सकी और भारत ने 38 रन से मैच जीत लिया।



मैच में मेजबान इंग्लैंड को 38 रन से हरा दिया। उसने 3 मैचों की सीरीज में 1-0 की बढ़त हासिल कर ली। इस मैच से हरमनप्रीत कौर को आराम दिया गया था और स्मृति मंधाना ने कप्तानी की। चेम्सफोर्ड में इंग्लैंड ने टॉस जीतकर गेंदबाजी चुनी। भारत ने 7 विकेट पर 188 रन बनाए। जवाब में इंग्लैंड 8 विकेट पर 150 रन ही बना सकी। भारत की ओर से जेमिमा रोड्रिग्स ने 69 और यास्तिका भाटिया ने 54 रन बनाए। डेब्यू मैच खेल रही नंदनी शर्मा ने 3

टीम की शुरुआत खराब रही। लॉरेन बेल ने पहले ओवर में स्मृति मंधाना और शेफाली वर्मा को आउट कर भारत का स्कोर 7 रन पर 2 विकेट कर दिया। इसके बाद यास्तिका भाटिया ने जेमिमा रोड्रिग्स के साथ मिलकर पावरप्ले में टीम का स्कोर 73/2 तक पहुंचाया। अप्रैल 2024 के बाद पहला मैच खेल रही यास्तिका भाटिया ने आक्रामक बल्लेबाजी की। उन्होंने इसी वॉग के ओवर में 4 चौकों समेत 27 रन बटोरे और सोफी एसलस्टोन पर सिक्स भी लगाया। यास्तिका

विकेट के लिए 76 गेंदों में 126 रन जोड़कर भारत को मजबूत स्थिति में पहुंचाया। लॉरेन बेल ने इंग्लैंड को शुरुआती सफलता दिलाई। हालांकि, खराब फील्डिंग से भारतीय बल्लेबाजों को रन लेने के मौके मिले। टिली कॉर्टिन-कोलमैन के धो पर यास्तिका रन आउट हुईं, जबकि जेमिमा चार्ली डीन की गेंद पर आउट हो गईं। आखिरी ओवरों में ऋचा घोष और भारतीय फुलमांली जल्दी आउट हुईं, लेकिन दीपति शर्मा की 22 रन की पारी से भारत ने बड़ा स्कोर

पहले ही ओवर में 3 विकेट लिए- डेब्यू कर रही नंदनी शर्मा ने अपने पहले ओवर में 3 विकेट लिए। उन्होंने एमी जोन्स और डैनी गिब्सन को लगातार गेंदों पर शेफाली वर्मा के हाथों कैच कराया। नंदनी हैंटिक पर धों, लेकिन चार्ली डीन ने अगली गेंद रोक ली। इसके दो गेंद बाद नंदनी ने इसी वॉग को बोल कर मैच भारत के पक्ष में कर दिया। इंग्लैंड इसके बाद वापसी नहीं कर सकी और भारत ने 38 रन से मैच जीत लिया।

विनेश फोगाट का ट्रायल रुकवाने सुप्रीम कोर्ट पहुंचा डब्ल्यूएफआई, एशियन गेम्स के लिए 30-31 मई को होना है सेलेक्शन हरियाणा अध्यक्ष बोले-खेल नियमों से चलता है

पंचकूला। भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) ओलंपियन रसलर विनेश फोगाट को ट्रायल देने से रोकने के लिए सुप्रीम कोर्ट पहुंच गया है। शुक्रेण को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई होगी। यह सुनवाई जस्टिस पीएस नरसिम्हा और

रहा था, जिसमें उन्होंने सिंगल बेंच के अंतरिम आदेश को चुनौती दी थी। सिंगल जज बेंच ने उनकी याचिका पर अंतरिम राहत देने से इनकार कर दिया था। विनेश फोगाट ने अपनी याचिका में डब्ल्यूएफआई की चयन नीति और उन्हें जारी किए

आरोप में कारण बताओ नोटिस भी जारी किया था। कुश्ती महासंघ ने लिखा था- विनेश ने संन्यास से वापसी की लिए छह महीने पहले सूचना नहीं दी। इससे डब्ल्यूएफआई संविधान, यूनाइटेड वर्ल्ड रेसलिंग (युडब्ल्यूडब्ल्यू) नियमों तथा एंटी-

नामुफकिन और बहुत इम्पॉसिबल चीज है। सरकार ने सब बूजभूषण के सहारे छोड़ा-विनेश ने कहा, कौन रेफरी, किसके मैच में जाएगा। कौन रेफरी कितने पॉइंट देगा, कौन मैच चेंचरमन कहा पर बैठेगा, किसको जितवाना है, किसको हारवाना है।



जस्टिस आलोक आराधे की बेंच करेगी। 30 व 31 मई को यह ट्रायल दिल्ली में होने है। इनके आधार पर सितंबर में जापान में होने वाली एशियन गेम्स 2026 में भाग लेने वाले खिलाड़ियों का चयन होना है। दिल्ली हाईकोर्ट ने 22 मई को दिए आदेश में विनेश फोगाट को 30-31 मई को होने वाले चयन ट्रायल में भाग लेने की अनुमति दी थी। इसी फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई है। हाईकोर्ट ने यह भी निर्देश दिया था कि ट्रायल की पूरी प्रक्रिया की वीडियो रिकॉर्डिंग कराई जाए। इसे पारदर्शी बनाने के लिए भारतीय खेल प्राधिकरण (एसएआई) और भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) द्वारा नियुक्त स्वतंत्र पर्यवेक्षकों की निगरानी में कराया जाए। उधर, इस मामले में कुश्ती संघ हरियाणा के अध्यक्ष रमेश बोहर ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि देश के पहलवानों के साथ ज्यादती न हो, इसलिए डब्ल्यूएफआई कोर्ट गई है। जो पहलवान जिला, स्टेट और नेशनल तक होते हुए मुकाबले में पहुंचा है, उसके सामने किसी को सीधे एंटी नहीं दी जाएगी। कुश्ती फंडेशन के अपने नियम हैं, खेल नियमों से चलता है। पहलवानों के हक के लिए डब्ल्यूएफआई सुप्रीम कोर्ट में गई है। दिल्ली हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस देवेन्द्र कुमार उपाध्याय और जस्टिस तेजस करिया की डिवीजन बेंच ने विनेश के पक्ष में फैसला सुनाया था। कोर्ट विनेश फोगाट की उस अपील पर सुनवाई कर

गए शो-कॉज नोटिस को चुनौती दी है। अब सुप्रीम कोर्ट में होने वाली सुनवाई पर सभी की नजरें टिकी हैं, क्योंकि इसका असर एशियन गेम्स 2026 के चयन प्रक्रिया पर पड़ सकता है। पेरिस ओलंपिक में खेला आखिरी मुकाबला-विनेश फोगाट ने 2024 में पेरिस ओलंपिक में अपना आखिरी कुश्ती मैच खेला था। विनेश ने 50 किलोग्राम वेट कैंटेगरी में 6 अगस्त 2024 को एक ही दिन में 3 मैच खेले थे। सेमीफाइनल में न्यूबा की रसलर को पटखनी दी। फाइनल खेलने से पहले वजन की जांच की गई तो उनका वजन 100 ग्राम ज्यादा निकल। इसके बाद उन्हें अयोग्य करार दे दिया गया। विनेश फोगाट ने 8 अगस्त 2024 को कुश्ती से संन्यास लेने का ऐलान कर दिया। 12 दिसंबर 2025 को विनेश ने संन्यास वापस लेने का ऐलान करते हुए कहा था कि वह 2028 में लॉस एंजलिस ओलंपिक में हिस्सा लेना चाहती है। विनेश हरियाणा के जौद जिले की जुलाना सीट से कांग्रेस की विधायक हैं। कुश्ती महासंघ ने एंटी-डोपिंग नियमों का हवाला देकर लगाया था बैन-डब्ल्यूएफआई ने एंटी-डोपिंग नियमों के तहत संन्यास से वापसी करने वाले एथलीटों के लिए अनिवार्य छह महीने की नोटिस अवधि का हवाला देते हुए फोगाट को 26 जून, 2026 तक घरेलू प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए अयोग्य घोषित कर दिया था। अनुशासनहीनता और एंटी-डोपिंग नियमों के उल्लंघन के

डोपिंग प्रारंभियों का उल्लंघन हुआ। डब्ल्यू ने आगे कहा- उनके व्यवहार से भारतीय कुश्ती की छवि को नुकसान पहुंचा और राष्ट्रीय स्तर पर शर्मिंदगी हुई। साथ ही विनेश से चार प्रमुख आरोपों पर जवाब मांगा था। साथ ही पूछा था कि कार्यवाही क्यों नहीं की जाए। पिछले डेढ़ साल से रेसलिंग मैच से दूर थी- विनेश ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो पोस्ट करते हुए कहा- आप सब को नमस्कार। जैसा की सभी को पता है कि पिछले डेढ़ साल से मैं रेसलिंग मैच से काफी दूर थी। लेकिन अब कुछ महीनों से मैं रेसलिंग की तैयारियां कर रहा हूँ। बड़ी मेहनत और ईमानदारी से मेहनत कर रही हूँ। जैसे मैंने पहले देश के लिए मेडल जीते, परमात्मा के आशीर्वाद से, आप सबके सहयोग से फिर से रेसलिंग मैच पर जाऊँ और देश के लिए ढेर सारे मेडल जीतूँ और देश के तिरंगे का मान बनाए रखूँ। एक महीने पहले कॉम्पिटिशन अनाउंस हुआ-विनेश ने आगे कहा कि मैं आप सबके साथ वीडियो के माध्यम से कुछ बातें साझा करना चाहती हूँ। आज से करीब एक महीना पहले रेसलिंग फेडरेशन ने एक कॉम्पिटिशन का अनाउंसमेंट किया गया। यह टूर्नामेंट जहां पर ऑर्गनाइज करवाया जा रहा है, वो गोंडा यूपी है। जहां बूजभूषण का घर है। वहां उसका प्राइवेट कोलेज है। वहां पर मेहनत करने वाले हर खिलाड़ी को उसका हक मिलेगा, यह बड़ा

वे सब बूजभूषण और उसके लोगों द्वारा कंट्रोल किया जाएगा। सरकार और हमारा खेल मंत्रालय मुक दर्शक बनकर इस चीज को देख रहा है। कोई खिलाड़ियों की मदद के लिए आगे नहीं आ रहा, मानो बूजभूषण को फ्री हैंड दिया हुआ है कि तुम जो मर्जी करो। चाहे तुम महिला पहलवानों के साथ कुछ करो या तुम कुश्ती जगत के साथ कुछ भी करो। हम तुम्हारे साथ में खड़े हैं। सभी मेहनती खिलाड़ियों का वजन सही से चेक किया जाएगा, उनकी मेहनत का असल रिजल्ट मैच पर निकलकर आएगा, ऐसा मुझे नहीं लगता। तीन साल से केस कोर्ट में पेंडिंग है-विनेश ने कहा कि आज से तीन साल पहले हमने सेक्सुअल हैरैसमेंट के खिलाफ भी आवाज उठाई थी। उससे संबंधित केस कोर्ट में पेंडिंग है। 6 महिला खिलाड़ियों ने उसमें शिकायत और गवाही दी थी, उस केस में गवाहियां चल रही हैं। सुप्रीम कोर्ट की गाइडलाइन है कि किसी भी पीडित की पहचान को सार्वजनिक न किया जाए, क्योंकि उनकी गरिमा और मान सम्मान की बात होती है। आज कुछ मजबूरियां ऐसी हैं कि मैं आप सभी को कुछ बताना चाहती हूँ। मैं अभी नहीं बोलना चाहती थी, क्योंकि कोर्ट में केस पेंडिंग है। देश के सामने सब सच्चाई सामने आ जाएगी। मैं बताना चाहती हूँ कि उन 6 में से एक विक्रम में खुद हूँ, जिन्होंने शिकायत दी थी।

नई पीढ़ी की अच्छी हेल्थ हमारे निर्णयों से तय होती है

विज्ञान लंबे समय से यह मानता आया है कि जिन जीवन की आधारशिला है। लेकिन हाल के वर्षों में आए शोध सिद्ध करते हैं

प्रक्रिया भावी पैरेंट्स के पोषण, तनाव और जीवनशैली से प्रभावित होती है। यही कारण है कि प्री-

वजन अधिक है, तो बच्चों में मधुमेह और हृदय रोग का खतरा बढ़ जाता है। यह केवल जिन का असर नहीं, बल्कि

महत्वपूर्ण है। आज की जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों को जड़ अकसर जीवन के शुरुआती चरणों में ही पड़ जाती है। यदि हम गर्भधारण



कि बच्चों का स्वास्थ्य केवल जिन से निर्धारित नहीं होता, बल्कि बच्चों के गर्भ में आने से पहले के माता-पिता के स्वास्थ्य और जीवनशैली से भी प्रभावित होता है।

ब्रिटेन में हुई 'एवन लॉन्गिटीयुडिनल स्टडी ऑफ पैरेंट्स एंड चिल्ड्रन (एएलएसीपीएस)' ने कई महत्वपूर्ण तथ्य दिए हैं। इस पर आधारित और द लैंसेट चाइल्ड एंड अडोलेसेंट हेल्थ (2023) में प्रकाशित स्टडी में देखा गया कि शुरुआती जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियां बच्चों की जिन-अभिव्यक्ति को बदल सकती हैं। बीएमजे ओपन (2022) के अध्ययन ने गर्भवस्था के दौरान मांओं में तनाव को बच्चों में हृदय संबंधी जोखिमों से जोड़ा है। वहीं वेल्कम ओपन रिसर्च (2023) ने पिता के स्वास्थ्य की बच्चों के स्वास्थ्य में भूमिका को रेखांकित किया है।

बच्चे अपने माता-पिता से डीएनए प्राप्त करते हैं, जो मधुमेह, मोटापा, हृदय रोग और मानसिक स्वास्थ्य जैसे स्थितियों की संभावना को प्रभावित करता है। लेकिन डीएनए की संरचना बदले बिना जिन कब और कितना सक्रिय होगा, यह

कॉन्सेप्शनल हेल्थ- यानी गर्भधारण से पहले का स्वास्थ्य अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाता है। इसका मतलब है कि अगर किसी माता-पिता को अपने होने वाले बच्चे का अच्छा स्वास्थ्य चाहिए तो उन्हें खुद पोषण, स्वस्थ वजन, नियमित शारीरिक गतिविधि, नशे से दूरी और अच्छा मानसिक संतुलन बनाए रखना होगा। यह जिम्मेदारी महिलाओं-पुरुषों की समान रूप से है।

शोध बताते हैं कि यदि पिता गर्भधारण से पहले धूम्रपान करते हैं, तो इससे बच्चों को मिलने वाले डीएनए में ऐसे बदलाव हो सकते हैं, जो अस्थिमा, मोटापा और मेटाबोलिक रोगों का जोखिम बढ़ाते हैं। मातृ-धूम्रपान के प्रभाव और भी गंभीर हैं। ऐसे बच्चों में जन्म के समय कम वजन और आगे चलकर मोटापे की सम्भावना अधिक होती है।

वैश्विक स्तर पर लगभग 14.4 फीसदी महिलाएं और 27.5 फीसदी पुरुष गर्भवस्था के दौरान धूम्रपान करते हैं, जो इस समस्या की व्यापकता को दर्शाता है। इसी तरह, यदि माता-पिता का

शरीर के भीतर बने वाले जैविक संकेतों का भी परिणाम है, जो भ्रूण के विकास को प्रभावित करते हैं। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, भारतीय शिशु अकादमी और भारत के प्रसूति एवं स्त्री रोग समाजों के महासंघ ने प्री-कॉन्सेप्शनल केयर को प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं में शामिल करने की सिफारिश की है। इनमें फोलिक एसिड सप्लीमेंट, एनीमिया, डायबिटीज और थायरॉइड की जांच, स्वस्थ जीवनशैली और मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देने की बात कही गई है।

प्री-कॉन्सेप्शनल हेल्थ के फायदे केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक भी हैं। इससे समय से पहले जन्म, कम वजन और जन्मजात विकारों का जोखिम कम होता है। दीर्घकाल में यह मधुमेह और हृदय रोग जैसे बीमारियों को कम करता है। इससे परिवारों का इलाज पर होने वाला खर्च घटता है और स्वास्थ्य प्रणाली पर बोझ कम होता है।

भारत जैसे देश में- जहां गैर-संचारी रोग तेजी से बढ़ रहे हैं- यह दृष्टिकोण विशेष रूप से

से पहले ही स्वास्थ्य सुधार पर ध्यान दें, तो आने वाली पीढ़ियों को अधिक स्वस्थ बनाया जा सकता है। इसके बावजूद, हमारे स्वास्थ्य तंत्र में प्री-कॉन्सेप्शनल केयर अभी भी सीमित है। अधिकतर प्रयास गर्भवस्था या जन्म के बाद शुरू होते हैं, जबकि वास्तविक अवसर उससे पहले मौजूद होता है। हमें इस सोच को बदलना होगा और प्री-कॉन्सेप्शनल हेल्थ को सार्वजनिक स्वास्थ्य का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। शोध समाज की प्रगति के सहायक हो सकते हैं, बशर्ते उनको स्वास्थ्य नीतियों में शामिल किया जाए। विज्ञान का संदेश स्पष्ट है- जिन मंच चरण करते हैं, लेकिन कहानी पर्यावरण लिखता है- हमारे व्यवहार और जीवनशैली के जरिए।

आने वाली पीढ़ियों का स्वास्थ्य आज, हमारी गतिविधियों से तय हो रहा है। ऐसे में प्री-कॉन्सेप्शनल हेल्थ में निवेश केवल चिकित्सकीय आवश्यकता नहीं, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी भी है, जो स्वस्थ भविष्य की नींव रखती है।

(ये लेखकों के अपने विचार हैं, डॉ. चन्द्रकान्त लहारिया)

बच्चे की पसंद और नापसंद उसके जन्म से पहले तय हो सकती है

'भूख लग रही है बच्चा? बस मुझे थोड़ा समय दो। मैं जल्दी से गाजर और बीन्स को घर में उगाई पालक से मिलाकर एक बढ़िया

परिचित होंगे, जिसमें मांएं इसी तरह से अपने बच्चों से मनुहार करती हैं। जब मेरी हंसी छूट गई तो

मैं अपने सभी चचेरे-ममेरे भाई-बहनों में सबसे बड़ा हूँ। हम सबमें एक बात समान है। हमें सब्जियां और दही पसंद हैं,

मैं कहीं अधिक रुचि ले सकता हूँ।' इस अध्ययन में फ्रांस, नीदरलैंड्स, कैंब्रिज और एस्टन यूनिवर्सिटी के शोधकर्ता भी



सब्जी बना देती हूँ, जिसे तुम अपनी रोटी के साथ बड़े चाव से खाओगे।' मैंने एक बार रसोई में अपनी मां को यह कहते सुना था। बैठकखाने से मैं मौसी को देख सकता था, जो अपनी गर्भवस्था के आखिरी दो महीनों में हमारे यहां रहने आई थीं। वे रसोई के भीतर एक कुर्सी पर पसरी गहरी नींद में थीं। मैंने मां से पूछा, 'आप किससे बात कर रही हैं, मौसी तो गहरी नींद में हैं?' मां ने कहा, 'तुम अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो और उस नन्हे बच्चे से हो रही मेरी बातचीत में देखल मत दो।' मैं वापस पढ़ने चला गया और मां भोजन पकाते समय उसकी रेसीपी तक बोल-बोलकर सुनाती रही। मुझे यह बातचीत एक युवा मां के घर जाने पर याद हो आई। वो अपने बच्चे के पीछे भागते हुए कह रही थी, 'प्लीज, अपनी सब्जियां खा लो, फिर मैं कार्टून लगा दूंगी।' आज अधिकांश युवा पैरेंट्स इस तरह के दृश्य से

उसने कहा, 'अंकल, बचपन में आप भी तो अपने पैरेंट्स को सब्जियां खाने के लिए इसी तरह से तंग करते होंगे।' तब मैंने उसे उपरोक्त प्रसंग सुनाया। उसने पूछा, 'आपकी मां किससे बात कर रही थीं?' मैंने कहा, 'हमारे जमाने में बच्चे को सब्जियां पसंद करवाने की शुरुआत शायद उसके जन्म से पहले ही हो जाती थी।' और केवल सब्जियां ही नहीं, बल्कि कर्नाटकी संगीत गाना, कहानियां सुनाना और पौराणिक पुस्तकों को उची आवाज में पढ़कर सुनाना भी गर्भवस्था के अंतिम महीनों की दिनचर्या का हिस्सा हुआ करते थे। क्योंकि हमारे माता-पिता का मानना था कि बच्चे की पसंद और नापसंद उसके जन्म से पहले, गर्भ के भीतर ही आकार लेने लगती हैं। मां डर्न पैरेंट्स, त्योरियां चढ़ाकर कुछ कहने की कोशिश मत कीजिए। पहले मुझे अपनी बात समझाने दीजिए। हमारे बड़े परिवार में मेरे कुछ कजिन्स या तो हमारे घर में जन्मे थे, या उनके जन्म से पहले के आखिरी दो महीनों में मेरी मां उनके घर जाकर रही थीं।

कर्नाटकी संगीत प्रिय है, और हममें से अधिकतर कई भाषाओं-जिनमें संस्कृत भी शामिल है- और कहानी सुनाने की कला में अच्छे हैं। यह गुण मेरी मां में भी था। यूके स्थित डरहम यूनिवर्सिटी की प्रो. नादजा रीसलैंड ने ठीक इसी विषय पर शोध किया है और पाया है कि जिन सब्जियों की गंध से बच्चों का गर्भ में रहते हुए ही बार-बार परिचय कराया जाता है, उनके प्रति जन्म के बाद उनमें नकारात्मक प्रतिक्रिया की संभावना कम हो सकती है।

रीसलैंड ने स्वीकारा, 'अपनी रिसर्च के आधार पर हम कह सकते हैं कि गर्भवस्था के अंतिम चरण में किसी विशेष स्वाद के संपर्क में आने से बच्चों में लंबे समय तक रहने वाली स्वाद-स्मृतियां बनी रह सकती हैं, जो जन्म के कई वर्षों बाद तक उनकी भोजन संबंधी पसंद को प्रभावित कर सकती हैं।'

उन्होंने आगे कहा, 'यदि भ्रूण को कुछ खान-पान की आदतों का अभ्यस्त बना दिया जाए, तो आगे चलकर वह स्वस्थ भोजन करने

शामिल थे। एस्टन यूनिवर्सिटी ने इस कार्यक्रम को वित्तपोषित किया था।

जब मैंने सह-लेखकों में से एक की यह टिप्पणी पढ़ी कि 'ये निष्कर्ष खानपान के बारे में शुरुआती हस्तक्षेपों पर सोचने के नए रास्ते खोलते हैं', तो मुझे अपने माता-पिता और बुजुर्गों पर बहुत गर्व हुआ, जो शायद इन शोधकर्ताओं के समझने से बहुत पहले ही यह बात जानते थे। संभवतः उन्होंने यह सीख उस प्रसिद्ध कथा से ली थी, जिसमें अभिमन्यु मां के गर्भ में रहते हुए ही चक्रव्यूह को भेदना सीख लेता है। ऐसे नए शोध हमारी पुरानी परंपराओं के प्रति नई रुचि जगाते हैं। फंडा यह है कि हमारे बुजुर्गों की कुछ परंपराएं भले ही आज लोगों की त्योरियां चढ़ा दें, लेकिन उन्होंने हमारा कोई नुकसान तो नहीं किया है। फिर आज की गर्भवती युवा मांओं के लिए कम-से-कम भोजन से जुड़ी उस परंपरा को अपनाने में क्या बुराई है? इस विषय पर अपनी राय मुझे अवश्य लिख भेजिए। एन. रघुरामन

क्या हम कभी केवल अपनी ही कहानी सुना सकते हैं?

साहित्य के इतिहास में एक खूब जाना-माना वाक्य है- 'द पास्ट इज अ डिफेंड कट्टी, दे दू थिंग्स डिफेंडली देयर' ('अतीत एक अलग देश है, जिसका अपना भूगोल है, अपने रीति-रिवाज हैं')। 1953 में हार्टले द्वारा लिखे गए उपन्यास 'द

के बारे में बताती हैं, तो पाठकों का मन द्रवित हो उठता है। आज वे सफल लेखिका हैं, पढ़ाती हैं, घर हैं और उनके बच्चे भी कामयाबी के पथ पर हैं। ऐसे में उस अतीत से उनका क्या रिश्ता है, जो दुःखों से भरा हुआ था? यह सोचते मुझे

के रूप में नहीं, बल्कि आत्म की कहानी के रूप में समझूँ, तो कई नए पहलू खुल जाते हैं। गांधीजी ने आत्मकथा को शायद इसी रूप में समझा था- आत्म का विकास। शायद इसीलिए जब उनसे कोई शुभचिंतक कहता है कि हम

वक्त काटने के साधन नहीं थे। मैंने उनसे कहा, आप के जो मन में आए, अपने बारे में लिखो। उन्होंने शुरुआत की किन्तु तुरंत ही छोड़ दिया। उनका कहना था वे उनकी और मेरी आत्मकथा लिख रही थीं, फिर लगा कि उन्हें

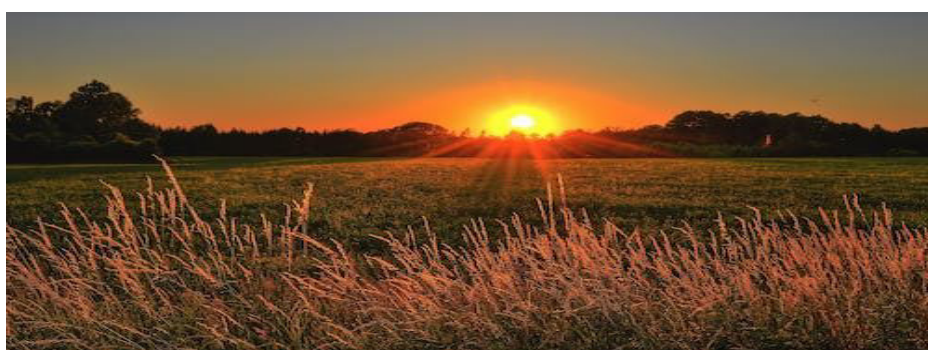
हमारी दुनिया बिना शिक्षकों वाले स्कूलों के युग में प्रवेश कर रही है

परंपरागत शिक्षकों के बिना चलने वाले स्कूलों का दौर अब आ चुका है। मैसेचुसेट्स के बोस्टन स्थित अल्फा स्कूल में आपका स्वागत है, जो इसी अकादमिक सत्र से खुलने जा रहा है। 'अल्फा' नाम जानबूझकर चुना गया है, ताकि यह स्कूल के मुख्य छात्रवर्ग? को दर्शा सके, जो 2010 से 2024 के

छात्रों की प्रगति पर नजर रखते हैं। बोस्टन में कैंब्रिज स्ट्रीट पर स्कूल की पहली शाखा किंग्सगार्टन से 8वीं तक के 25 छात्रों के छोटे समूह से शुरू होगी। अगले साल यह क्षमता 50 करने की योजना

करता है। समर्थकों का दावा है कि इससे 'सेल्फ-डायरेक्शन' और 'रेजिलिएंस' जैसे वास्तविक जीवन-कौशल विकसित होते हैं। इस नए ढांचे में 'शिक्षक' यानी एआई को हर छात्र की जरूरत के अनुसार

एक ही असाइनमेंट से नहीं जुझती, न छात्रों में सबसे पहले काम खत्म करने की होड़ होती है। इसके बजाय सॉफ्टवेयर हर यूजर के मालाबिक खुद को ढाल लेता है। हालांकि कई पैरेंट्स स्क्रीन टाइम बढ़ने पर चिंता जताते हैं, लेकिन अकसर वे उद्देश्यहीन सोशल मीडिया उपयोग और निगरानी में



गो-बिटवीन' का यह पहला वाक्य है। यहां अतीत को दूसरा देश कहकर शायद हमें बताया जा रहा है कि हम भूतकाल को वर्तमान के नजरिये से न देखें। क्योंकि तब समय स्पेस बन जाता है, इतिहास भूगोल बन जाता है। हम समय को तीन हिस्सों में बांटते हैं- भूत, वर्तमान और भविष्य। यह एक बहते समंदर को तीन हिस्सों में बांटने की तरह है, जो हमारी सुविधा के लिए किया जाता है। क्या हम अपनी पिछली जिंदगी को वर्तमान से अलग कर सकते हैं? क्या उसकी छाया वर्तमान पर नहीं पड़ती? इसी बात पर मेरी चर्चा सुमित्रा मेहरोल से हुई। सुमित्राजी दलित महिला हैं, जिनकी आत्मकथा 'दूटे' पंखों से परवाज तक हमारी चर्चा का विषय था। सुमित्राजी की जिंदगी में तीन स्तरों पर चुनौतियां थीं- विकलांग होना, दलित होना और स्त्री होना। एक चौथा स्तर भी जोड़ा जा सकता है- आर्थिक तकलीफों का। आत्मकथा में जब सुमित्रा अपने शैशवकाल की बात करती हैं और अवहेलना, धिक्कार से भरे जीवन

खाल आया कि आत्मकथा तब लिखी जाती है, जब हम दुःखों से जूझकर बाहर निकल आते हैं, उनमें गंके नहीं होते। समय हम पर हावी नहीं होता, उसको हम पीछे छोड़कर उसकी जकड़ से निकल जाते हैं। अतीत विलीन नहीं हो जाता, उसके डरावने दानव अभी भी हमारे वर्तमान के दरवाजों पर दस्तक देते हैं, पर अब हम इतने सक्षम हो चुके होते हैं कि तय कर सकते हैं उन दानवों को कितनी देर घर में बिठाना है। यहां मैं ऐसे ट्रॉमा की बात कर रही हूँ, जो सुमित्रा और छोटे-बड़े अंश में कई लोगों की जिंदगी का हिस्सा है। हादसों से भरा अतीत एक भूगोल नहीं बनाता, पर एक थका हुआ दानव जरूर बन जाता है, जिसका खौफ कम होने लगता है। ऐसे में जीवन को साहित्य का स्वरूप देकर आत्मकथा, उपन्यास वगैरह लिखे जाते हैं, खासतौर पर उनके द्वारा, जो हमेशा हाशिए पर रहे हों। लेकिन मुझे आत्मकथा के स्वरूप में भी रुचि है। यदि मैं 'आत्मकथा' को केवल स्वयं द्वारा लिखी जीवनी

लोग आत्मकथाएं नहीं लिखते, सिर्फ पश्चिमी देशों के लोग लिखते हैं तो वे जवाब देते हैं, मैंने कब कहा आत्मकथा लिख रहा हूँ, मैं तो सिर्फ सत्य के प्रयोगों की बात कर रहा हूँ। इससे जाहिर होता है कि गांधीजी का मंसूबा अपनी भौतिक पहचान को न लेकर अपनी अंदरूनी यात्रा के बारे में था। पाश्चात्य देशों से आए इस साहित्यिक रूप का गांधीजी ने रूपांतर किया था और चीज पाश्चात्य देशों से भिन्न है और यह फर्क भी आत्मकथा के बारे में सोचते हुए मैं समझी हूँ। क्या हम खुद की कहानी ऐसे लिख सकते हैं, जिसमें हम सिर्फ अकेले हों? हमारी जिंदगी कई लोगों से जुड़ी हुई है, चाहे वे अपने हों, पसंदीदा लोग हों या नहीं। हमारा 'सेल्फ' एक अकेला टापू नहीं है, जिसके इर्द-गिर्द कोई और नहीं हो। मुझे याद है कि कोविड महामारी के दरमियान मेरी मां बॉखलाई हुई थीं। वे मुश्किल से तीसरी क्लास तक पढ़ी हुई हैं और उसके पास

सब बातें नहीं बतानी हैं। आत्मकथा तो सिर्फ एक व्यक्ति की होती है, तो उनकी और मेरी आत्मकथा का क्या मतलब हुआ? तब मुझे लगा कि हमारे जीवन के अनुभव और साहित्य-स्वरूप एक-दूसरे से सहमत नहीं हैं। जिस समाज में परिवार से बाहर हमें अपनी कल्पना तक न हो, वहां आत्मकथा सिर्फ अपनी नहीं हो सकती। रामानुजान एक कविता में कहते हैं, 'मैं सब जैसा दिखता हूँ सिवाय अपने जैसा।' अपनी तस्वीर ढूँढते हुए कई बार हम पूर्वजों के हस्ताक्षर पाते हैं। आत्मकथा की यही विडम्बना है- उसके रूप की अपेक्षा जीवन के अनुभव से भिन्न है। क्या हम खुद की कहानी ऐसे लिख सकते हैं, जिसमें हम अकेले हों? हमारी जिंदगी कई लोगों से जुड़ी हुई है, चाहे वे अपने हों, पसंदीदा लोग हों या नहीं। हमारा 'सेल्फ' एक अकेला टापू नहीं है, जिसके इर्द-गिर्द कोई और नहीं हो। (ये लेखिका के अपने विचार हैं, रीटा कोठारी)



बीच जन्मी जनरेशन यानी अल्फा का हिस्सा है। पहली बार स्कूली व्यवस्था में दाखिल हो रहे ये बच्चे इतिहास की डिजिटल तौर पर सबसे दक्ष पीढ़ी माने जाते हैं। इनके बाद आगामी 'जनरेशन-बीटा' (2025-2039 के बीच जन्मे), जिनके बारे में माना जाता है कि वे ऐसी दुनिया में रहेंगे, जहां एआई रोजमर्रा के हर काम का अभिन्न हिस्सा होगा। अगर सोच रहे हैं कि ऐसे स्कूल में सामान्य दिन कैसा होता है, तो आप पेंसिल छोड़ने, रबर खोने या शिक्षक की बात सुनने की चिंता छोड़ सकते हैं। स्कूल में हर छात्र के पास एक लैपटॉप है, जिसमें एक समर्पित एआई ट्यूटोर होता है। पढ़ाई हर छात्र की अपनी गति और स्तर के अनुसार होती है, जहां पारंपरिक शिक्षक की जगह 'गाइड्स' होते हैं। ये गाइड्स निर्देश देने की जगह

कस्टमाइज किया गया है। यह उस मूल धारणा को चुनौती देता है कि सीखने के लिए इंसानी शिक्षक चाहिए। इसकी जगह विचार यह है कि बच्चे खुद अपने शिक्षा यात्रा के प्रोएक्टिव लीडर बन सकते हैं। छात्र गणित, विज्ञान और सोशल स्टडीज के लिए विशेष सॉफ्टवेयर का उपयोग करते हैं, जबकि कमरे में मौजूद गाइड्स के लिए पारंपरिक शैक्षणिक योग्यता भी जरूरी नहीं है। इस अपारंपरिक तरीके के बावजूद स्कूल स्टेट करिकुलम फ्रेमवर्क का पालन करता है और आवश्यकता पड़े तो किसी छात्र की व्यक्तिगत जरूरत के मुताबिक रीडिंग स्पेशलिस्ट जैसे विशेष स्टाफ की नियुक्ति भी करता है। शायद इस व्यवस्था का सबसे खास पहलू यह है कि कैसे एआई हर बच्चे को व्यक्तिगत तरीके से चुनौती देता है। अब पूरी कक्षा एक समय पर

किए जा रहे प्रोएक्टिव स्कूल वर्क के बीच अंतर को समझ कर संतुष्ट हो जाते हैं। स्कूल प्रशासन का दावा है कि एआई से छात्र पूरे दिन के अकादमिक कार्य को महज दो घंटों में ही पूरा कर लेते हैं, जिससे दिन का बड़ा हिस्सा फिजिकल एजुकेशन और अन्य पाठ्यतर गतिविधियों के लिए बचता है। इसके दीर्घकालीन प्रभावों को छोड़ें तो फिलहाल यह साफ है कि स्कूली शिक्षा का नया दौर आ चुका है। फंडा यह है कि हमें खुद को ऐसी जिंदगी के लिए तैयार करना होगा, जहां तकनीक इंसानी अनुभव में बड़ी भूमिका निभाएगी। जैसे-जैसे हमारा पारंपरिक ढांचा पलट रहा है, लगता है कि परिवारों में शिक्षा ही वह पहला अहम स्तंभ है, जो पूरी तरह बदलने जा रहा है। एन. रघुरामन

मानसून अब इसी हफ्ते केरलम पहुंचेगा, तूफानी हवाओं ने श्रीलंका में रोका, 10फीसदी कम बारिश का अनुमान

नयी दिल्ली। देश में मानसून की एंटी लैट हो गई है। मौसम विभाग ने शुक्रवार को बताया कि श्रीलंका के ऊपर कम दबाव वाली तूफानी हवाओं के चलते केरलम तट से 30-35 किमी दूर 5 दिन

है। यानी बारिश का सीधा असर फसलों और खाद्य उत्पादन पर पड़ता है। मानसून कोर जोन में मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र का विदर्भ, झारखंड, ओडिशा, तेलंगाना, कुछ हिस्से उत्तर प्रदेश

तय समय से 8 दिन पहले यानी 24 मई को ही केरलम पहुंच गया था। मानसून केरलम से आगे बढ़ते हुए महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में आमतौर पर मध्य जून तक पहुंचता है। 11



से अटका है और अगले 2-3 दिन इसके आगे बढ़ने के आसार नहीं हैं। केरलम के तट पर मानसून पहुंचने की सामान्य तारीख 1 जून मानी जाती है। इससे पहले मौसम विभाग ने 26 मई तक ही मानसून आने का अनुमान बताया था। इस तरह पिछले अनुमान से मानसून करीब 10 दिन बाद देश में एंटी करेगा। आईएमडी के मुताबिक जून-जुलाई में भी उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, बिहार, ओडिशा, छत्तीसगढ़, गुजरात और आंध्र प्रदेश में हीटवेव चलने की संभावना है। आमतौर पर उस वक्त तापमान 30-35 डिग्री तक रहता है। इस बार 3 डिग्री ज्यादा टेंपरेचर रहेगा। मौसम विभाग ने बताया कि इस साल देश में औसतन 78 सेंटीमीटर बारिश का अनुमान है। जो सामान्य से करीब 10फीसदी कम है। 13 अप्रैल को 80 सेंटीमीटर बारिश का अनुमान लगाया गया था। 1971-2020 के आंकड़ों के आधार पर देश में औसत बारिश 87 सेंटीमीटर मानी जाती है। मौसम विभाग ने बताया कि जून में मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड में सामान्य से भी कम बारिश होगी। वहीं महाराष्ट्र, राजस्थान और गुजरात के कुछ हिस्सों में सामान्य बारिश का अनुमान है। मौसम विभाग ने बताया कि इस साल मानसून के कोर जोन में कम बारिश होगी। इस इलाके में खेती सबसे ज्यादा मानसूनी बारिश पर निर्भर करती

और बिहार के इलाके आते हैं। यहां खेती पर असर पड़ने से किसानों को सीधा नुकसान होगा। देश में कुल बारिश का करीब 75फीसदी हिस्सा मानसून के दौरान होता है, जो सिंचाई, पीने के पानी और बिजली उत्पादन के लिए बेहद जरूरी है। करीब 64फीसदी आबादी कृषि पर निर्भर है। सिर्फ 55फीसदी खेती योग्य जमीन ही सिंचाई से कवर है। कम बारिश का असर खरीफ सीजन की बुवाई, फसल उत्पादन और कुल कृषि गतिविधियों पर पड़ेगा, जिससे किसानों की लागत और जोखिम दोनों बढ़ सकते हैं। बारिश कम होने से उत्पादन घट सकता है, जिसका असर सफाई पर पड़ेगा और इससे सविज्ञान, दालों सहित खाने-पीने की चीजों की कीमतें बढ़ सकती हैं। खेती कमजोर रहने पर गांवों में आय कम हो सकती है, जिससे ग्रामीण बाजार में खर्च और मांग दोनों प्रभावित होंगे। ग्रामीण मांग में कमी आने पर ट्रैक्टर और ट्रैक्टर जैसे वाहनों की बिक्री पर भी असर पड़ने की संभावना है। अगर बारिश कम रहती है तो डैम और जलाशयों का जलस्तर सामान्य से नीचे रह सकता है, जिससे आगे चलकर पानी की उपलब्धता प्रभावित हो सकती है। कम बारिश और ज्यादा गर्मी की स्थिति में बिजली की खपत बढ़ेगी, खासकर उन क्षेत्रों में जहां तापमान ज्यादा रहता है। पिछले साल मानसून

जून तक मुंबई और 8 जुलाई तक पूरे देश में फेल जाता है। इसकी वापसी उत्तर-पश्चिम भारत से 17 सितंबर को शुरू होती है और यह पूरी तरह 15 अक्टूबर तक लौट जाता है। अल नीनो इफेक्ट की वजह से मानसून में देरी हो सकती है। हालांकि सीजन के आखिर में थोड़ी राहत मिल सकती है। आईएमडी के आंकड़ों के मुताबिक, बीते 150 साल में मानसून के केरलम पहुंचने की तारीख अलग-अलग रही है। 1918 में मानसून सबसे पहले 11 मई को केरलम पहुंच गया था, जबकि 1972 में सबसे देरी से 18 जून को केरलम पहुंचा था। मौसम विभाग ने कहा कि कमजोर मानसून के पीछे की वजह अल-नीनो है। जून में अल नीनो का असर दिख सकता है। जुलाई और अगस्त में भी कमजोर से मध्यम स्तर का अल नीनो बने रहने की संभावना है। अल नीनो के कारण समुद्र का पानी असामान्य रूप से गर्म हो जाता है, जिसके साथ हवा के पैटर्न में भी बदलाव आता है। इसके असर से दुनियाभर में बारिश का चक्र बिगड़ जाता है। कहीं भयंकर सूखा तो कहीं मूसलाधार बारिश और बाढ़ आती है। सीधे शब्दों में कहें तो जब अल-नीनो एक्टिव होगा, तब प्रशांत महासागर से भारत की तरफ आने वाली मानसूनी हवाओं को रोक देगा। इससे बारिश पर असर पड़ेगा।

कॉकरोच जनता पार्टी का एक्स अकाउंट अभी बंद ही रहेगा, दिल्ली हाईकोर्ट ने सरकार और एक्स को नोटिस दिया, समय 4 हफ्ते का

नयी दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के संस्थापक अभिजीत दिपके की याचिका पर केंद्र सरकार और एक्स को नोटिस जारी किया है। दिपके ने सीजेपी का एक्स अकाउंट ब्लॉक किए जाने को चुनौती दी है। कोर्ट ने फिलहाल अकाउंट दोबारा चालू करने का अंतरिम आदेश देने से इनकार कर दिया। कोर्ट ने कहा कि इस मामले में फैसला लेने से पहले सरकार का पक्ष सुनना जरूरी है। जस्टिस पुरुषोत्तम कुमार कौरव

जस्टिस कमेटी के सामने पेश होने का अनुरोध कर सकते हैं। दिपके बोले- सीजेपी राजनीतिक और सामाजिक व्यंग्य- सीजेपी राजनीतिक और सामाजिक व्यंग्य (सटापर) पर आधारित पहलू है। अगर कुछ पोस्ट आपत्तिजनक हैं, तो सिर्फ उन्हें ब्लॉक किया जा सकता है। पूरे अकाउंट को बंद करना सही नहीं है। पहले भी ऐसे मामलों में अदालतें राहत दे चुकी हैं और कुछ अकाउंट बहाल हुए हैं। कोर्ट बोला- ब्लॉकिंग ऑर्डर की वजह अभी साफ

पर केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय सुरक्षा चिंताओं का हवाला देते हुए कार्रवाई की थी। इसके बाद इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 की धारा 69ए के तहत एक्स को अकाउंट ब्लॉक करने का निर्देश दिया था। सीजेपी का एक्स अकाउंट 21 मई ब्लॉक कर दिया गया था। जब पुराना अकाउंट बंद हुआ, तब 1.93 लाख से ज्यादा फॉलोअर्स थे। संगठन ने कुछ देर बाद नया अकाउंट बनाया। इसका नाम



की बेंच ने कहा कि सरकार का पक्ष सुने बिना ऐसा आदेश नहीं दिया जा सकता, क्योंकि मामले के व्यापक प्रभाव और दूरगामी परिणाम हैं। अदालत ने केंद्र सरकार से चार सप्ताह में जवाब दाखिल करने को कहा और मामले की अगली सुनवाई 6 जुलाई को तय की। कॉकरोच जनता पार्टी एक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म है, जो भारत के चीफ जस्टिस सुर्यकांत की हालिया कॉकरोच टिप्पणी के बाद सामने आया। शुक्रवार दोपहर 3 बजे तक सीजेपी के इंस्टाग्राम पर 2.25 करोड़ (22.5 मिलियन) फॉलोअर्स हैं। हाईकोर्ट ने ब्लॉकिंग ऑर्डर की समीक्षा करने का भी निर्देश दिया। अदालत ने कहा कि नियमों के तहत रिट्यू कमेटी हर दो महीने में बैठक करती है और उसे ब्लॉकिंग आदेश के सभी पहलुओं की जांच करने का अधिकार है। बेंच ने कहा, 'रिट्यू कमेटी सभी पहलुओं की जांच करेगी और उसका निर्णय रिपोर्ट पर रखा जाएगा। अमेरिका के बोस्टन में रहने वाले दिपके वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के

नहीं- फिलहाल सिर्फ नोटिस जारी किया जा सकता है। इस मामले में कानून अभी शुरूआती दौर में है। ब्लॉकिंग ऑर्डर की वजह अभी साफ नहीं है। न याचिकाकर्ता ने ब्लॉकिंग ऑर्डर देखा है, न कोर्ट ने। जिन पुराने मामलों का हवाला दिया गया, वे अलग थे। वहां कुछ पोस्ट विवादिता थीं, यहां पूरे अकाउंट की गतिविधियों पर सवाल है। सांसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि- इंटरमीडियरी (एक्स) याचिकाकर्ता की मदद करता दिख रहा है। सरकार का पक्ष सुने बिना कोई आदेश नहीं दिया जाना चाहिए। जरूरत पड़ने पर ब्लॉकिंग ऑर्डर और पूरा रिकॉर्ड कोर्ट के सामने रखा जा सकता है। दिपके ने उस सरकारी आदेश को चुनौती दी है, जिसके तहत राष्ट्रीय सुरक्षा संबंधी कारणों का हवाला देकर सीजेपी का एक्स हंडल ब्लॉक किया गया था। याचिका एडवोकेट नकुल गांधी ने दायर की है। इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के अनुसार, इंटरनेटसे ब्यूरो के इनपुट के आधार

‘कॉकरोच इज बैक’ रखा गया और बायो में लिखा- कॉकरोच डॉट डाय यानी कॉकरोच मरते नहीं। सुप्रीम कोर्ट ने 24 मई को कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) से जुड़े व्यक्तियों की गतिविधियों की सीबीआई से जांच करवाने की मांग पर तुरंत सुनवाई करने से इनकार कर दिया। कोर्ट में याचिकाकर्ता के वकील एनके गोस्वामी ने कहा कि सीजेपी, ज्यूडिशियरी की इमेज खराब कर रही है। इसके बाद सीजेआई और जस्टिस जॉयमाल्या बागवी और जस्टिस विपुल पंचोली की बेंच ने कहा, 'इस इतनी भावुकता से मत लें। 29 मई को दोपहर 3 बजे तक सीजेपी के इंस्टाग्राम पर 2.25 करोड़ (22.5 मिलियन) फॉलोअर्स हैं, जबकि बीजेपी के 94 लाख (9.4 मिलियन) और कांग्रेस के 1.36 करोड़ (13.6 मिलियन) फॉलोअर्स हैं। यानी सीजेपी के फॉलोअर्स बीजेपी से दोगुने से भी ज्यादा और कांग्रेस से करीब 89 लाख अधिक हैं।

30 लाख कर्ज उतारने गया था रूस, ड्रोन अटैक में मौत, मां-बाप बोले- अब भूखे मरेंगे

भुवनेश्वर। 16 मई की रात ओडिशा में रहने वाले गणेश के

उतारेगा। रमैया के साथ हमले में ओडिशा के दो और युवक

परिवार का सबसे बड़ा सहारा था। हम सब मजदूरी करके रोज

खेतबासी के घर पर उनकी पत्नी मिली। उन्होंने बताया,

लोकल एजेंसियों के जरिए रूस जा रहे हैं। रमैया को रूस भेजने



पास छोटे भाई रमैया का फोन आया। बताया कि घर खर्च के लिए 22 हजार रुपए भेज रहा है। डेढ़ महीने पहले ही रमैया कंस्ट्रक्शन साइट पर काम करने के लिए रूस गया था। मां से भी बात हुई। कहा नाइट ड्यूटी पर हूँ और खाना खाकर साइट जाने की तैयारी कर रहा हूँ। सब रोज की तरह सामान्य था। अगले दिन सुबह दोबारा कॉल आया। अबकी फोन रमैया के रूम पार्टनर देवेंद्र का था। उसने बताया कि सुबह करीब 5 बजे कंपनी साइट पर यूक्रेन ने कई ड्रोन हमले किए। रमैया भी साइट पर था और हमले का शिकार हो गया। दोपहर होते-होते उसकी मौत की खबर आ गई। घटना को 10 दिन से ज्यादा बीत चुके हैं, रमैया का अंतिम संस्कार भी कर दिया गया, लेकिन गंजाम में रह रहा उनका परिवार अभी सदमे से उबर नहीं सका है। परिवार परेशान है कि रमैया के जाने के बाद बहनों की शादी के लिए लिया 30 लाख का कर्ज कौन

घायल हुए हैं। दोनों का मॉस्को में इलाज चल रहा है। रमैया मास्को में तुर्की की ऑयल और गैस कंपनी में स्टील इन्वेंटर के तौर पर काम कर रहे थे। उनके परिवार से मिलने के लिए हम गंजाम के माधवांधा गांव पहुंचे। घर पर मिले रमैया के बड़े भाई गणेश बताते हैं, 'परिवार में माता-पिता और भाई-बहन सभी दिहाड़ी मजदूर हैं। इसी से घर का खर्च चलता है। बहनों की शादी में लिया कर्ज चुकाने के लिए रमैया रूस गया था।' 'वो करीब एक साल से मास्को में कंस्ट्रक्शन सेक्टर में इलेक्ट्रिकल लाइन और स्ट्रक्चरल काम कर रहा था। इसी साल फरवरी में छुट्टी लेकर गांव लौटा था और फिर 22 मार्च को मॉस्को लौट गया था। रमैया हर महीने करीब 42 हजार रुपए की कमाई से 35 हजार घर भेज देता था। मौत से एक दिन पहले जब उससे बात हुई थी, तब भी वो परिवार की ही फिक्र में था।' 'रमैया की मां रोते हुए कहती हैं, 'वो हमारे

मुश्किल से 200 से 500 रुपए कमा पाते हैं। कई दिन ऐसे भी होते हैं, जब काम नहीं मिलता और परिवार को भूखे सोना पड़ता है। अब कौन हमें सहारा देगा।' परिवार वालों ने बताया कि इस बार रमैया गांव लौटकर अपना छोटा-मोटा काम शुरू करना चाहता था। उसने शादी करने की भी तैयारी की थी। रमैया के चाचा नारायण दिल्ली में मजदूरी करते हैं। वे कहते हैं, 'गरीबी और काम न मिलने की वजह से गांव के लड़के काम के लिए बाहर जाने को मजबूर हैं। हमारा रमैया भी इसीलिए बाहर गया, वरना कोई जान जोखिम में डालकर रूस क्यों जाता। अब उसके बड़े मां-बाप की देखभाल कौन करेगा।' मॉस्को में रमैया के साथ ही ओडिशा के खेतबासी रेड्डी और तेजेश्वर रेड्डी भी हमले का शिकार हुए हैं। दोनों अभी मॉस्को के अस्पताल में भर्ती हैं। उनके परिवारों से मिलने हम गंजाम के कोथारसिंग गांव पहुंचे।



'गर्दन और चेहरे पर गंभीर चोटें आई हैं। परिवार के पास उन्हें भारत लाकर इलाज कराने के पैसे नहीं हैं, इसलिए वो मॉस्को में ही हैं। कंपनी उनका इलाज करा रही है।' उन्होंने खेतबासी से हमारी फोन पर बात भी कराई। वे बताते हैं कि 17 मई को कुल 7 ड्रोन हमले हुए थे और करीब 15 लोग इसकी जद में आए। हमले में अकेले रमैया की ही मौत नहीं हुई, अजरबैजान का एक मजदूर भी मारा गया था। इसके अलावा गोपालपुर के रहने वाले सुनील, पारलाकहेमंडी के चिनारा और दासरथी के साथ बेनीपुर के दुर्योधन भी घायल हुए हैं। रूस में इस वक्त करीब 70 हजार भारतीय काम कर रहे हैं। वहीं ओडिशा के गंजाम और केंद्रपाड़ा जिलों से सबसे ज्यादा युवा रूस में काम कर रहे हैं। गंजाम से हर साल करीब 200 और केंद्रपाड़ा से 150 युवक

वाली मायकोन इंजीनियरिंग ट्रेनिंग एंड टेस्टिंग सेंटर के मालिक बासुदेव रेड्डी बताते हैं कि हमारी एजेंसी स्किल डेवलपमेंट और रिक्रूटमेंट का काम करती है। वे कहते हैं, 'हादसे की जानकारी मिलते ही हमने मॉस्को में मौजूद कंपनी के अधिकारियों से बात की। फिर ओडिशा सरकार की मदद से डेडबॉडी भारत लाकर परिवार को सौंपी।' इसी दौरान हमने रमैया के परिवार की मदद की। डायरेक्टर से बात कराते मुआवजे की रकम भी तय कराई। कंपनी ने 66 लाख रुपए मुआवजा देने की बात कही है।' हालांकि रमैया के परिवार का कहना है कि अब तक पूरा मुआवजा नहीं मिला है। डेथ सर्टिफिकेट और बाकी जरूरी दस्तावेजों की प्रक्रिया भी पूरी नहीं हुई है।

नीट मामले पर खुद पीएम की नजर है, सुप्रीम कोर्ट बोला- ये घटनाएं युवाओं को झकझोरने वाली, हम उन्हें निराश नहीं कर सकते

नयी दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट में शुक्रवार को नीट-यूजी पेपर लीक

की जाएगी, ये घटनाएं रुकेगी नहीं। 'केस की सुनवाई आने

कोर्ट ने पूछा- एजेंसी ने पिछली गलती से क्या सीखा-इससे पहले

एक कमेटी बनाई गई थी, जिसने कई सिफारिशें दीं, जिन्हें

लीक केस क्या है-नीट-यूजी परीक्षा 3 मई को देश के 551

SC ने केंद्र सरकार, NTA और CBI से जवाब मांग

| | | |
|--|--|---|
| <p>केंद्र सरकार से सवाल</p> <p>NEET परीक्षा प्रणाली में सुधार के लिए क्या कदम उठाए एए?</p> <p>2024 में सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों और के. राधाकृष्णन राधाकृष्णन कमेटी की सिफारिशों को लागू करने में सरकार ने</p> <p>NTA की कार्यप्रणाली में सुधार और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए क्या व्यवस्था बनाई गई?</p> | <p>NTA से सवाल</p> <p>2024 में बनी मोनोटोरिंग कमेटी की सिफारिशों पर क्या कार्रवाई हुई?</p> <p>पेपर लीक रोकने के लिए-कौन से उपाय सुरक्षा लागू किए?</p> <p>इन उपायों के बावजूद 2026 में फिर पीन फिन्डर पेपर लीक कैसे हुआ?</p> | <p>CBI से सवाल</p> <p>NEET-UG पेपर लीक की जांच लॉक कहां कहां पहुंच रही?</p> <p>लीक के शिफारिश किसमें आयों के विद्यमान सामने आए?</p> <p>लीक के पीछे कौन लोग या तक सवाक की क गिछे कौन लोग या नेटवर्क जिम्मेदार है?</p> |
|--|--|---|

मामले से जुड़ी याचिकाओं पर सुनवाई की। सांसिटर जनरल तुषार मेहता ने कोर्ट को बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी खुद इस मामले पर नजर रख रहे हैं ताकी कोई चूक न हो। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि नीट पेपर लीक

रहे जस्टिस नरसिम्हा ने शिक्षा मंत्रालय से नीट-यूजी परीक्षाओं की जांच प्रक्रिया ब्योरा मांगा है। नेशनल टैस्टिंग एजेंसी (एनटीए) ने बताया कि पेपर लीक के बाद बड़े लेवल पर सुरक्षा सुधार किए हैं। देशभर में 3 मई को नीट-

25 मई को सुनवाई हुई थी। तब कोर्ट ने एनटीए को फटकार लगाई थी। जस्टिस पीएस नरसिम्हा और जस्टिस आलोक अराधे की बेंच ने एनटीए को फटकारते हुए कहा था कि यह दुखद की बात है कि आपने

स्वीकार भी किया गया था। एनटीए 28 मई तक हलफनामा दाखिल करे और बताए कि 2024 में दिए गए निर्देशों और मॉनिटरिंग कमेटी की सिफारिशों पर क्या कदम उठाए गए। कोर्ट ने मौजूदा मामले में केंद्र सरकार और सीबीआई से भी जवाब मांगा था। फर्मा की याचिका में मांगे- नीट-यूजी कराने के लिए एनटीए की जगह एक मजबूत और स्वायत्त व्यवस्था बनाई जाए या फिर इसकी पूरी संरचना बदली जाए। क्योंकि बार-बार पेपर लीक होने से 22.7 लाख से ज्यादा छात्रों के माँलिक अधिकारों पर सीधा असर पड़ा है। नई संस्था बनने तक एक हाई-पावर मॉनिटरिंग कमेटी बनाई जाए, जो दोबारा परीक्षा की निगरानी करे। इसमें रिटायर्ड सुप्रीम कोर्ट जज को चेयरमैन बनाया जाए, साथ ही साइबर सिक्योरिटी एक्सपर्ट और फोरेंसिक साइंटिस्ट को शामिल किया जाए, ताकि पेपर लीक से रोका जाए। यूनाइटेड डॉक्टर्स फ्रंट की मांग- एनटीए को मौजूदा व्यवस्था को भंग किया जाए। नई राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी बनाई जाए। अब जानिए नीट पेपर

शहरों और विदेश के 14 केंद्रों पर आयोजित हुई थी। इसमें करीब 23 लाख उम्मीदवार शामिल हुए थे। एनटीए के अनुसार 7 मई की शाम परीक्षा में गड़बड़ी की सूचना मिली थी। इसके बाद मामला केंद्रीय एजेंसियों को सौंपा गया। 12 मई को परीक्षा रद्द की गई और सी-एजाम का फैसला लिया गया। 15 मई को शिक्षा मंत्रालय और एंटीए ने नीट सी-एजाम की तारीख 21 मई को होने का ऐलान किया। नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेस टेस्ट भारत में मेडिकल और डेंटल कोर्सज में दाखिले के लिए होने वाली राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षा है। इसकी शुरुआत 2013 में हुई थी। इस परीक्षा के माध्यम से देश के सभी सरकारी और निजी मेडिकल कॉलेजों में एमबीबीएस, बीडीएस, आयुष (बीएएमएस, बीएचएमएस) और नर्सिंग जैसे कोर्सज में दाखिला मिलता है, जिसमें एम्स और जियमर जैसे प्रतिष्ठित संस्थान भी शामिल हैं। भी देश में लगभग 1 लाख से अधिक एमबीबीएस और 27000 से अधिक बीडीएस सीटें हैं।



जैसी घटनाएं युवाओं को झकझोरने वाली हैं। हम युवाओं को निराश नहीं कर सकते। सुप्रीम कोर्ट ने कहा- ऐसे मामलों में जब तक जवाबदेही तय नहीं

यूजी परीक्षा हुई थी। 7 मई की शाम पेपर लीक की खबर सामने आई थी। 12 मई को परीक्षा रद्द कर दी गई। 21 जून को सी-एजाम होगा। 25 मई: सुप्रीम

(एनटीए) ने पहले हुए पेपर लीक मामले से कोई सबक नहीं लिया। बेंच ने कहा था कि साल 2024 में भी पेपर लीक का मामला कोर्ट तक पहुंचा था। तब

कहानी रितेश की, फिल्में फ्लॉप हुईं तो एक्टिंग छोड़ना चाहते थे- कॉमेडी से नई पहचान बनी फिर विलेन बनकर चौकाया, अब कर रहे हैं बड़े प्रोजेक्ट पर वर्क

मुंबई। कॉमेडी फिल्मों से पहचान बनाने वाले रितेश देशमुख आज 'राजा शिवाजी' में छत्रपति शिवाजी महाराज के

से आर्किटेक्चर की डिग्री हासिल की। पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने कुछ समय न्यूयॉर्क की एक आर्किटेक्चर फर्म में काम

के बाद उनका करियर आसान नहीं रहा। उनकी कई फिल्में लगातार फ्लॉप रही और इंडस्ट्री में धारणा बनने लगी कि वह ज्यादा समय तक नहीं टिक पाएंगे। सिद्धार्थ कन्नन को दिए इंटरव्यू में रितेश ने बताया था कि जब उन्होंने फिल्मों में कदम रखा, तब उन्हें भरोसा नहीं था कि वह इंडस्ट्री में लंबे समय तक टिक पाएंगे। फिल्में फ्लॉप हुईं तो एक्टिंग छोड़ने का ख्याल आया-रितेश ने बताया कि एक

समय तक बॉलीवुड में कॉमेडी फिल्मों के लिए पहचाने जाते रहे। लेकिन करियर के एक दौर में उन्होंने अपनी इमेज तोड़ने का फैसला किया। उन्होंने ऐसे किरदार चुनने शुरू किए, जिनमें उनका डार्क और खतरनाक अंदाज दिखाई दे। दिलचस्प बात यह रही कि विलेन के रूप में भी उन्हें काफी सराहना मिली। 'एक विलेन' बना करियर का टर्निंग पॉइंट-रितेश के करियर का सबसे बड़ा टर्निंग पॉइंट 'एक

इसके बाद उन्हें अलग तरह के रोल मिलने शुरू हुए। रितेश की सबसे बड़ी ताकत उनका सॉफ्ट फेंस माना जाता है। स्क्रीन पर वह सामान्य और शांत इंसान जैसे दिखते हैं। यही वजह है कि जब वह अचानक हिंसक या खतरनाक किरदार निभाते हैं, तो उसका असर ज्यादा मजबूत दिखाई देता है। क्रिटिक्स का मानना है कि रितेश ने विलेन के किरदारों में ओवरएक्टिंग के बजाय शांत और दबे हुए गुस्से का इस्तेमाल किया, जिसने उनके रोल को ज्यादा डरावना बनाया। प्रोड्यूसर और डायरेक्टर के तौर पर नई पारी की शुरुआत-अभिनेता होने के साथ-साथ रितेश देशमुख अब प्रोड्यूसर और डायरेक्टर के तौर पर भी मराठी इंडस्ट्री में बड़ा नाम बन चुके हैं। रितेश और उनकी पत्नी जेनेलिया डिसूजा ने मिलकर 'मुंबई फिल्म कंपनी' नाम की प्रोडक्शन कंपनी शुरू की। राजनीतिक परिवार से आने वाले रितेश हमेशा से मराठी संस्कृति और इतिहास से जुड़े रहे हैं। यही वजह है कि उन्होंने मराठी फिल्मों को बड़े स्तर पर पेश करने की कोशिश की और ऐसी फिल्में बनाई, जिनका स्कैल हिंदी फिल्मों जैसा दिखाई दे। 'लय भारी' ने मराठी सिनेमा की तस्वीर बदल दी-साल 2014 में रिलीज हुई 'लय भारी' रितेश के मराठी करियर की सबसे बड़ी फिल्मों में गिनी जाती है। इस फिल्म को जेनेलिया ने प्रोड्यूस किया था और डायरेक्टर निशिकांत कामत थे। फिल्म में रितेश ने दोहरे रोल निभाए थे। एक्शन, भावनाएं और जनप्रिय मनोरंजन से भरपूर इस

करण जौहर ने शाहरुख खान-आलिया भट्ट को किया अनफॉलो, करीना कपूर सहित कई करीबी दोस्तों को हटाया, बोले- डिजिटल डिटॉक्स कर रहा हूँ

मुंबई। फिल्म मेकर करण जौहर ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट

'डिजिटल डिटॉक्स' बताया है। करण ने लिखा कि वे सोशल



से शाहरुख खान, आलिया भट्ट और करीना कपूर सहित कई करीबी दोस्तों को अनफॉलो कर दिया है। इस बदलाव के बाद उनके फॉलोअर्स की संख्या 1.8 करोड़ से घटकर 1.75 करोड़ रह गई है। करीबी दोस्तों को अनफॉलो करने की वजह बताते हुए करण ने इंस्टाग्राम स्टोरी पर एक पोस्ट शेयर किया है। उन्होंने इसे

मीडिया पर अपना समय और एनर्जी कम करने के लिए ऐसा कर रहे हैं। करण जौहर ने उन कलाकारों को भी अनफॉलो कर दिया है जिन्हें उन्होंने खुद फिल्म इंडस्ट्री में लॉन्च किया था। इनमें उनकी करीबी आलिया भट्ट, करुण धवन और सिद्धार्थ महलोत्रा शामिल हैं। इसके अलावा जानकी कपूर, मलाइका अरोड़ा और मनीष

महलोत्रा भी उनकी फॉलो लिस्ट से गाइब हैं। मनीष महलोत्रा के डिजाइन किए हुए आउटफिट को पहनकर ही हाल ही में करण ने मेट गाला इवेंट में हिस्सा लिया था। अब करण के अकाउंट पर फॉलोइंग की संख्या सिर्फ 74 रह गई है। प्रियंका चोपड़ा उन चुनिंदा कलाकारों में शामिल हैं जिन्हें वे अब भी फॉलो कर रहे हैं। इस कदम पर उठ रहे सवाल का जवाब करण जौहर ने सोशल मीडिया के जरिए ही दिया। उन्होंने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर लिखा, 'यह एक डिजिटल डिटॉक्स है। मैं इंस्टाग्राम पर सभी को अनफॉलो इसलिए कर रहा हूँ ताकि यहां बिताए जाने वाले समय और एनर्जी को कम कर सकूँ।' इसके साथ ही उन्होंने आगे लिखा कि वह कोई ऐसी बात नहीं है जिसे नेशनल न्यूज बनाया जाए। हालांकि अचानक उठाए गए इस कदम से उनके फैंस काफी हैरान हैं।

एक्ट्रेस शहाना गोस्वामी ने कहा- वह ओपन रिलेशनशिप में हैं, बोली- मेरी जिंदगी में कई पार्टनर हैं, लेकिन सब कैजुअल नहीं हैं

मुंबई। बॉलीवुड एक्ट्रेस शहाना गोस्वामी ने हाल ही में

एक नाम या दिशा में बांधना जरूरी नहीं है। सबसे जरूरी



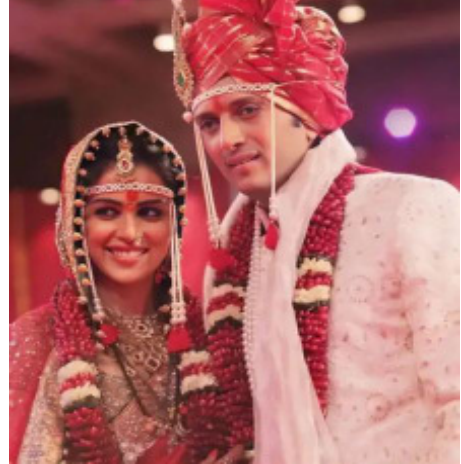
बताया कि वह बिना किसी प्राइमरी पार्टनर के ओपन

रीजियन और दोस्ती हैं। मेरे लिए दोस्त वही है, जिसके लिए

लोगों को खुद के बारे में सोचने पर मजबूर करती है और हर कोई इसके लिए तैयार नहीं होता। शहाना ने कहा कि कम उम्र में ही उन्हें ओपन रिलेशनशिप के बारे में समझ आ गई थी। एक्ट्रेस ने कहा, 'मुझे हमेशा लगा कि प्यार आजाद होना चाहिए। ऐसा नहीं होना चाहिए कि रिश्ता किसी इंसान को बांध दे या उसकी जिंदगी सीमित कर दे। इसी सोच ने मेरे रिश्तों और उन्हें निभाने के तरीके को तय किया है।' उन्होंने बताया कि उनके कई ओपन रिलेशनशिप पार्टनर्स एक-दूसरे से मिल चुके हैं। उनलोगे मुताबिक, ऐसे रिश्ते तभी चल पाते हैं, जब उनमें ईमानदारी और खुलकर बातचीत हो। शहाना ने यह भी कहा कि लोग अक्सर यह सोच लेते हैं कि उनकी जिंदगी आसान है या उन्हें कभी मुश्किल भावनाओं का सामना नहीं करना पड़ा। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है। उनके मुताबिक, आजादी का मतलब मुश्किलों से भागना नहीं होता। असली आजादी तब आती है, जब इंसान अपनी परेशानियों, डर और भावनाओं का सामना करता है और उनसे भागता नहीं। शहाना का कहना है कि बाहर से देखने वाले लोग अक्सर इसी बात को समझ नहीं पाते।

किरदार को लेकर चर्चा में हैं। हालांकि एक दौर ऐसा भी था, जब लगातार फ्लॉप फिल्मों और ट्रोपिंग से परेशान होकर उन्होंने एक्टिंग छोड़ने का मन बना लिया था। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री विलासराव देशमुख के बेटे होने की वजह से लोग उन्हें अक्सर एक्टर नहीं, बल्कि मुख्यमंत्री का बेटा कहते थे। डेब्यू फिल्म 'तुझे मेरी कसम' के बाद उनकी कई फिल्में नहीं चलीं और उन्होंने दोबारा आर्किटेक्चर की नौकरी करने का फैसला कर लिया था। बाद में 'मस्ती', 'धमाल', 'हे बेबी' और 'हाउसफुल' जैसी फिल्मों ने उन्हें इंडस्ट्री में बनाए रखा। फिर 'एक विलेन' में निगेटिव किरदार निभाकर उन्होंने अलग पहचान बनाई। आज की सक्सेस स्टोरी में जानते हैं रितेश देशमुख के करियर और निजी जीवन से

किया। उस दौर में उनका फोकस पूरी तरह आर्किटेक्चर करियर पर था और उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि फिल्मों में काम करेंगे। रितेश को कॉलेज के दिनों से ही स्टेज, एक्टिंग और एंटरटेनमेंट पसंद था। हालांकि वह काफी शर्मीले स्वभाव के थे। राजनीतिक परिवार से होने की वजह से वह सीमित दायरे में रहते थे और उन्हें लगता था कि संभलकर रहना चाहिए। 'तुझे मेरी कसम' से फिल्मों में एंट्री-रितेश का फिल्मों में आने का विचार धीरे-धीरे बना। उस समय तेलुगु फिल्म 'नुबे कवाली' बड़ी हिट हुई थी और इसके हिंदी रीमेक की तैयारी चल रही थी। इसी दौरान रितेश तक फिल्म की स्क्रिप्ट पहुंची। शुरुआत में उन्होंने ओरिजिनल फिल्म देखने की कोशिश की, लेकिन भाषा



समय ऐसा आया जब उनकी लगातार पांच फिल्में बॉक्स ऑफिस पर नहीं चलीं। उस दौर में उन्हें लगने लगा था कि उनका करियर खत्म हो चुका है। उन्होंने कहा था- एक वक्त ऐसा आया जब मेरी लगातार पांच फिल्में फ्लॉप हुईं। तब मैंने सोचा-बस, अब पैकअप में वापस आर्किटेक्चर में चला जाऊंगा। उस दौर में इंडस्ट्री में चर्चा शुरू हो गई थी कि रितेश शायद लंबे समय तक बॉलीवुड में टिक नहीं पाएंगे। लगातार असफल फिल्मों की वजह से उनका आत्मविश्वास भी प्रभावित हुआ। कॉमेडी फिल्मों ने इंडस्ट्री में टिकने का मौका दिया-लगातार असफलताओं के बाद रितेश के करियर ने नया मोड़ लिया। फ्लॉप फिल्मों के बाद जब उनकी फिल्में सफल होने लगीं, तो उन्हें लगा कि इंडस्ट्री में उनकी नई जिंदगी शुरू हो गई है। कॉमेडी फिल्मों में रितेश देशमुख की टाइमिंग दर्शकों को पसंद आने लगी। 'मस्ती', 'क्या कूल है हम', 'मालामाल वीकली', 'हे बेबी', 'धमाल' और 'हाउसफुल' जैसी फिल्मों ने उन्हें बॉलीवुड में पहचान दिलाई। बातचीत में रितेश देशमुख कहते हैं- मैं लोगों का आभारी हूँ। उस दौर में जब मैंने डेब्यू किया था, अगर किसी एक तरह की फिल्म हिट हो जाती थी तो उसी तरह के और काम मिलते थे। इसलिए मेरी एक कॉमेडी फिल्म चली, तो फिर मुझे दूसरी और तीसरी

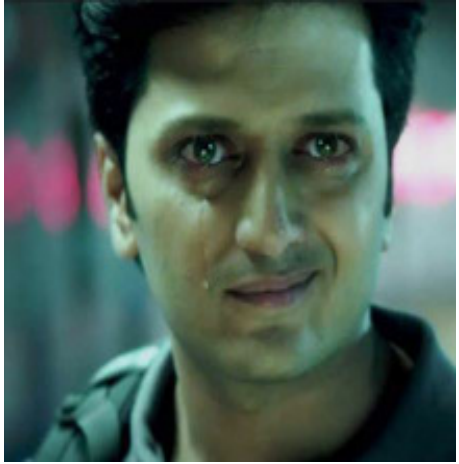
विलेन' रही। साल 2014 में रिलीज हुई इस फिल्म में उन्होंने राकेश महाडकर नाम के सीरियल किलर का किरदार निभाया था। फिल्म में उनका किरदार एक



आम आदमी का था, जो बाहर से शांत और साधारण नजर आता है, लेकिन अंदर से बेहद हिंसक और मानसिक रूप से परेशान होता है। राकेश अपनी पत्नी से लगातार अपमानित महसूस करता है और इसी कुंठा में महिलाओं की बेरहमी से हत्या करने लगता है। फिल्म में रितेश का शांत चेहरा और अचानक हिंसक हो जाना दर्शकों के लिए काफी शॉकिंग था। साबित किया कि सिर्फ कॉमेडी एक्टर नहीं है-एक विलेन' के रोल के लिए रितेश की काफी तारीफ हुई। कई क्रिटिक्स ने लिखा कि रितेश ने पहली बार साबित किया कि वह सिर्फ कॉमेडी एक्टर नहीं हैं। साल 2019 में फिल्म 'मरजावां' में रितेश ने विष्णु शेंड्रे नाम का निगेटिव किरदार निभाया। यह रोल अलग था, क्योंकि फिल्म में उनका किरदार बौने गैंगस्टर का था। विष्णु बेहद गुस्सेल, सनकी और पावर का भूखा इंसान होता है। फिल्म में वह सिद्धार्थ महलोत्रा के किरदार से नफरत करता है और अपने वर्चस्व के लिए किसी भी हद तक चला जाता है। हालांकि फिल्म को मिश्रित प्रतिक्रिया मिली, लेकिन रितेश के डायलॉग्स और स्क्रीन प्रेजेंस की काफी चर्चा हुई। खासकर उनका डायलॉग- 'कॉमिनेपन की हाइट तीन फुट' सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। रितेश कहा कि 'एक विलेन' उनके लिए बड़ा रिस्क

कैमियो भी चर्चा में रहा था। रितेश ने कई मराठी फिल्मों को प्रोड्यूस किया। उनका फोकस ऐसी कहानियों पर रहा, जो मराठी दर्शकों से जुड़ी हों, लेकिन प्रेजेंटेशन और स्केल में राष्ट्रीय स्तर की दिखें। मराठी फिल्म 'वेद' से डायरेक्टर बने-साल 2022 में मराठी फिल्म 'वेद' के जरिए रितेश ने निर्देशन में कदम रखा। यह फिल्म तेलुगु फिल्म 'मजिली' की मराठी रीमेक थी। फिल्म में रितेश और जेनेलिया की जोड़ी नजर आई। 'वेद' बॉक्स ऑफिस पर बड़ी हिट साबित हुई और मराठी सिनेमा की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्मों में शामिल हो गई। डायरेक्टर के तौर पर भी रितेश की काफी तारीफ हुई। अब 'राजा शिवाजी' से चर्चा में-इन दिनों रितेश अपनी महत्वाकांक्षी फिल्म 'राजा शिवाजी' को लेकर सुर्खियों में हैं। फिल्म रिलीज हो चुकी है और बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन कर रही है। यह फिल्म 'छत्रपति शिवाजी महाराज' के जीवन, युद्ध कौशल और हिंदवी स्वराज्य की स्थापना के संघर्ष पर आधारित है। फिल्म में रितेश ने खुद शिवाजी महाराज की भूमिका निभाई है और निर्देशन भी किया है। सलमान खान समेत कई बड़े स्टार्स की मौजूदगी-फिल्म की सबसे बड़ी खासियत इसका बड़ा स्टारकास्ट माना जा रहा है। सलमान खान फिल्म में खास कैमियो रोल में नजर आए हैं। उनके अलावा संजय दत्त, अभिषेक बच्चन, फरदीन खान, विद्या बालन, जेनेलिया और कई मराठी कलाकार भी अहम भूमिकाओं में दिखाई दिए हैं। यह फिल्म मराठी और हिंदी में रिलीज हुई है। खुद को अपडेट रखना बहुत जरूरी है-संघर्ष और चुनौतियों पर बात करते हुए रितेश देशमुख कहते हैं- चुनौती और संघर्ष यही हैं कि समय बदलता रहता है और सिनेमा के साथ दर्शकों की सोच भी बदल जाती है। हम अक्सर उसी पुराने ढंग की एक्टिंग में अटक जाते हैं, क्योंकि वह पहले चली थी। लेकिन समय बदलने पर अगर आप उसी तरह के रहो, तो आउट-डेट लगने लगते हैं। इसलिए अपने आप को समय के साथ अपडेट करना बहुत जरूरी है।

कैमियो भी चर्चा में रहा था। रितेश ने कई मराठी फिल्मों को प्रोड्यूस किया। उनका फोकस ऐसी कहानियों पर रहा, जो मराठी दर्शकों से जुड़ी हों, लेकिन प्रेजेंटेशन और स्केल में राष्ट्रीय स्तर की दिखें। मराठी फिल्म 'वेद' से डायरेक्टर बने-साल 2022 में मराठी फिल्म 'वेद' के जरिए रितेश ने निर्देशन में कदम रखा। यह फिल्म तेलुगु फिल्म 'मजिली' की मराठी रीमेक थी। फिल्म में रितेश और जेनेलिया की जोड़ी नजर आई। 'वेद' बॉक्स ऑफिस पर बड़ी हिट साबित हुई और मराठी सिनेमा की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्मों में शामिल हो गई। डायरेक्टर के तौर पर भी रितेश की काफी तारीफ हुई। अब 'राजा शिवाजी' से चर्चा में-इन दिनों रितेश अपनी महत्वाकांक्षी फिल्म 'राजा शिवाजी' को लेकर सुर्खियों में हैं। फिल्म रिलीज हो चुकी है और बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन कर रही है। यह फिल्म 'छत्रपति शिवाजी महाराज' के जीवन, युद्ध कौशल और हिंदवी स्वराज्य की स्थापना के संघर्ष पर आधारित है। फिल्म में रितेश ने खुद शिवाजी महाराज की भूमिका निभाई है और निर्देशन भी किया है। सलमान खान समेत कई बड़े स्टार्स की मौजूदगी-फिल्म की सबसे बड़ी खासियत इसका बड़ा स्टारकास्ट माना जा रहा है। सलमान खान फिल्म में खास कैमियो रोल में नजर आए हैं। उनके अलावा संजय दत्त, अभिषेक बच्चन, फरदीन खान, विद्या बालन, जेनेलिया और कई मराठी कलाकार भी अहम भूमिकाओं में दिखाई दिए हैं। यह फिल्म मराठी और हिंदी में रिलीज हुई है। खुद को अपडेट रखना बहुत जरूरी है-संघर्ष और चुनौतियों पर बात करते हुए रितेश देशमुख कहते हैं- चुनौती और संघर्ष यही हैं कि समय बदलता रहता है और सिनेमा के साथ दर्शकों की सोच भी बदल जाती है। हम अक्सर उसी पुराने ढंग की एक्टिंग में अटक जाते हैं, क्योंकि वह पहले चली थी। लेकिन समय बदलने पर अगर आप उसी तरह के रहो, तो आउट-डेट लगने लगते हैं। इसलिए अपने आप को समय के साथ अपडेट करना बहुत जरूरी है।



जुड़ी बातें। राजनीतिक परिवार से ताल्लुक, लेकिन राजनीति से दूरी-रितेश देशमुख का जन्म 17 दिसंबर 1978 को लातूर, महाराष्ट्र में हुआ था। वह महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री विलासराव देशमुख के बेटे हैं। राजनीतिक परिवार से ताल्लुक होने की वजह से उनका बचपन राजनीति और सार्वजनिक जीवन के माहौल में बीता। हालांकि

समझ नहीं आने की वजह से ज्यादा देर नहीं देख पाए। बाद में निर्देशक के. विजय भास्कर ने उन्हें हैदराबाद बुलाकर पूरी स्क्रिप्ट सुनाई। रितेश स्क्रिप्ट और किरदार की सादगी से प्रभावित हुए। उन्हें लगा कि यह किरदार उनकी कॉलेज लाइफ जैसा है। रितेश कहते हैं- 'तुझे मेरी कसम' के जरिए मुझे सब करने का मौका मिला, जो मैं



रितेश ने कभी राजनीति में आने की इच्छा जाहिर नहीं की। उनका झुकाव शुरुआत से ही क्रिएटिव फोल्ड और डिजाइनिंग की तरफ था। आर्किटेक्चर की पढ़ाई, न्यूयॉर्क में नौकरी-रितेश की शुरुआती पढ़ाई मुंबई के जी.डी.

कॉलेज के दिनों में कभी खुलकर नहीं कर पाया था। लोग एक्टर से ज्यादा सीएम का बेटा मानते थे-उस समय इंडस्ट्री में चर्चा थी कि मुख्यमंत्री के बेटे होने की वजह से उन्हें आसानी से लॉन्च मिल गया। लेकिन रितेश मानते

कॉमेडी फिल्म मिलीं। मैं खुशकिस्मत था कि कॉमेडी-जेनर ने मुझे लंबे समय तक इंडस्ट्री में बनाए रखा। रितेश के मुताबिक, राजनीतिक परिवार से आने की वजह से उन्होंने बचपन से हार और वापसी दोनों करीब से देखी

थी, क्योंकि लोग उन्हें उस तरह के किरदारों से जल्दी टूटते नहीं हैं। कॉमेडी इमेज तोड़ने का फैसला किया-रितेश देशमुख लंबे



सोमानी मेमोरियल स्कूल से हुई। इसके बाद उन्होंने कमला रहेजा कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर एंड एनवायनमेंटल स्टडीज, मुंबई

हैं कि इस बैकग्राउंड की वजह से उन पर दबाव भी बहुत ज्यादा था। लोग उन्हें एक्टर से ज्यादा सीएम का बेटा मानते थे। डेब्यू



थी, क्योंकि लोग उन्हें उस तरह के किरदारों से जल्दी टूटते नहीं हैं। कॉमेडी इमेज तोड़ने का फैसला किया-रितेश देशमुख लंबे

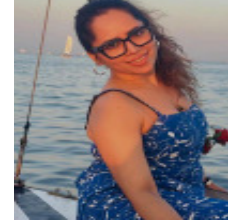
थी, क्योंकि लोग उन्हें उस तरह के किरदारों से जल्दी टूटते नहीं हैं। कॉमेडी इमेज तोड़ने का फैसला किया-रितेश देशमुख लंबे

आधुनिक समाचार/बॉलीवुड विशेष

अभिनय, ग्लैमर और बिजनेस की दुनिया में चमकता नाम-कंचन अवस्थी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) मुंबई। कंचन अवस्थी आज एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री का ऐसा चेहरा बन चुकी हैं, जिन्होंने अभिनय के

ब्रांड एंडोर्समेंट, लाइव इवेंट्स, म्यूजिक प्रोजेक्ट्स और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी अपनी मजबूत मौजूदगी दर्ज कराई है। उनका मानना है कि आज का दौर



साथ-साथ ग्लैमर, गायकी, सोशल मीडिया और बिजनेस की दुनिया में भी अपनी अलग पहचान बनाई है। लखनऊ से निकलकर मायागरी मुंबई तक का उनका सफर संघर्ष, मेहनत और आत्मविश्वास की गिनत माना जा रहा है। फिल्म 'मिस वाली दुल्हनिया' से सुर्खियों में आई कंचन अवस्थी का कहना है कि आज इंडस्ट्री में काम की कोई कमी नहीं है। जो कलाकार खुद को समय के साथ बदलना जानते हैं और नए अवसरों को अपनाते हैं, उनके लिए मनोरंजन जगत में अलग-अलग संभावनाएं मौजूद हैं। कंचन ने अभिनय के अलावा

मेहनत और स्क्रीन प्रेजेंस ने उन्हें इंडस्ट्री में एक भरोसेमंद और प्रतिभाशाली कलाकार के रूप में स्थापित किया है। बदलते बॉलीवुड पर बात करते हुए कंचन कहती हैं कि अब कलाकारों के लिए ओटीटी और डिजिटल मीडिया ने नए रास्ते खोले हैं। यहां प्रतिभा को ज्यादा महत्व मिलता है और दर्शक हर तरह के कंटेंट को अपनाने लगे हैं। अपनी सफलता का श्रेय परिवार, मेहनत और दर्शकों के प्यार को देने वाली कंचन अवस्थी अपने वाले समय में कई बड़े प्रोजेक्ट्स में नजर आने वाली हैं। अभिनय से आगे बढ़कर उन्होंने खुद को एक

प्रेरणादायक और आधुनिक महिला कलाकार के रूप में स्थापित किया है।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डॉ. दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिंटर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र.) 211002 से मुद्रित एवं सी-41यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज। संपादक/प्रकाशक डा.पुनीत अरोरा मो.नं.09415608710 RNI.NO.UPHIN/2015/63398

नोट- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पीओआरबी0 एक्ट के अन्तर्गत प्रस्तावित विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।